Reg. No. UPHIN/2014/73951

।। श्री गुरुवे नमः।।

।। जय निताइ।।

।। श्रीश्री राम राधारमणो जयतः।।

।। भज निताइ गौर राधेश्याम। जप हरे कृष्ण हरे राम।।

श्री श्री नित्यानन्द शतक



प्रातः स्मरणीय

श्रीश्री 108 श्रीयुत श्रीचन्द्रशेखरदास बाबा जी विरचित

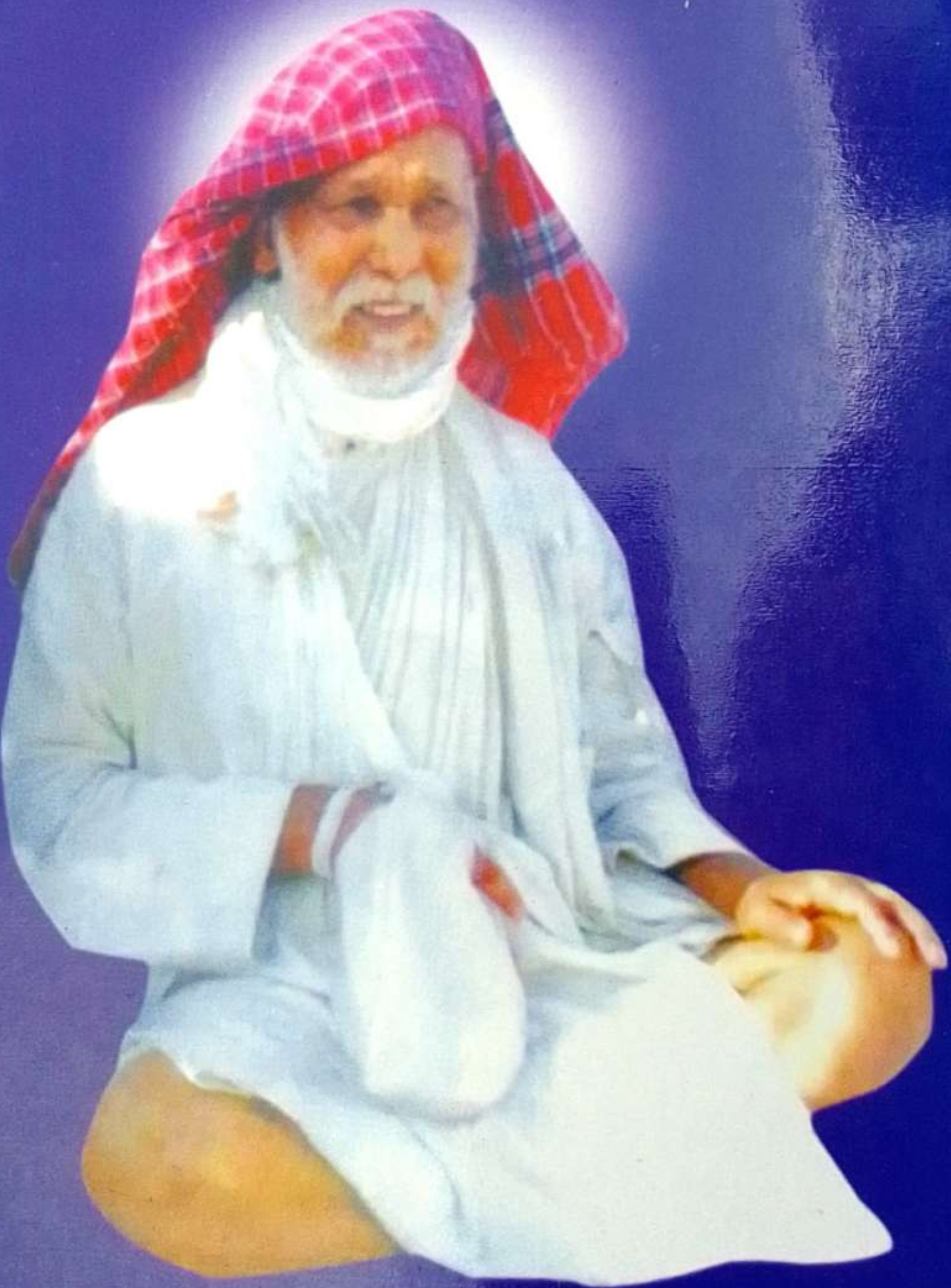
हिन्दी भावार्थ सहित

हिन्दी भावार्थ प्रस्तुति

श्री मनमोहन शर्मा

भज निताइ गौर राधे श्याम

जप हरे कृष्ण हरे राम



नित्यलीला प्रविष्ट परम विरक्त सन्त

श्री 108 श्रीचन्द्रशेखर दास बाबा जी महाराज

प्रकाशन सेवा - 100/- रूपये



।। श्रीगुरवे नमः ।।

अथ श्री श्रीनित्यानन्द शतक

वन्दौं श्री गुरुगौराङ्ग कुञ्जकेलिमत्तभृङ्ग ।
वन्दौं राम श्रीराधारमण ।।
वन्दौं प्राण गौरगण वन्दौं श्रीशचीनन्दन
वन्दौं राधा गोविन्द चरण ।। 1 ।।

भावार्थ-सर्वप्रथम मैं अपने श्रीगरुदेव श्री श्रीगौराङ्गदास बाबाजी महाराज, जो कि प्रिया-प्रियतम की कुञ्जकेलि रसास्वादन में सदा उन्मत्त रहने वाले भ्रमर स्वरूप हैं (जिस प्रकार भौंरा फूलों के रस को पान कर निरन्तर मत्त होकर पुन : पुन : उसी में विभोर रहता है ठीक उसी प्रकार जो श्रीश्रीराधागोविन्द रूपी पद्म के केलिविलास रूपी रस के आस्वादन में निरन्तर विभोर रहते हैं अतएव वे साक्षात् कुञ्ज केलिमत्त भङ्ग ही हैं) को प्रणाम करता हूँ। तदनन्तर मैं अपने परम गुरु श्री श्रीरामदास बाबाजी महाशय एवं परात्पर गुरु श्रीश्रीराधारमण चरणदास देवजी (बड़े बाबाजी महाशय) के श्रीचरणकमलों में प्रणाम करता हूँ। इसके उपरान्त समस्त अनन्त कोटि श्रीगौर परिकरवृन्द को प्रणाम करता हूँ। पुनः श्री भगवान् शचीनन्दन के श्रीचरणकमलों में प्रणाम करता हूँ एवं अन्त में श्रीश्रीराधागोविन्द के श्रीचरणकमलों में प्रणाम करता हूँ।

महामदे हइया भोर नाचे के एइ पागल
वरिषये प्रेमामृत धार।
हाँसे काँदे नाचे गाय भूमे गड़ागड़ि जाय
कभू मूर्छा धरणी ऊपर ।। 2 ।।

भावार्थ- महामद में मतवाला होकर यह कौन पागल प्रेमामृत धारा को बरसाता हुआ नाच रहा है? कभी तो यह हँसने कभी रोने कभी नाचने व गाने तथा कभी भूमि पर लोटपोट होने लगता है तथा कभी पृथ्वी पर मूर्छित होकर गिर पड़ता है।

झलमल आभरण झलसाय जगन्नयन

झरझर धारा अनिवार।

झमझम नूपुर बोल झाँझाँ गरजे खोल

झङ्कार हुङ्कार घनघोर ।। 3।।

भावार्थ-इसके सभी अंगों में आभूषण सजे हुए हैं जो कि अपनी चमक से लोगों के नेत्रों को चकाचौंध कर रहे हैं। इसके नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बह रही है। नृत्य करते हुए झमझम की मधुर ध्वनि हो रही है। झाँ झाँ झाँ की मधुर ध्वनि सहित खोल बज रहा है। इस प्रकार नूपुरों की झङ्कार के बीच-बीच में हुङ्कार घनघोर की ध्वनि सुनाई पड़ रही है।

उपरोक्त पद में इस अद्‌भुत पागल की रूप माधुरी व नृत्य माधुरी का चित्र प्रस्तुत किया है। चारों ओर भक्त मण्डली खोल करताल सहित संकीर्तन कर रही है, तथा उसके बीच में दिव्य आभूषणों से सुसज्जित, मधुर नूपुरों का कलरव करते हुए यह अनोखा पागल मधुर नृत्य कर रहा है। तथा बीच-बीच में जोर से हुङ्कार कर उठता है। कैसी अनुपम माधुरी है, चारों ओर इतना सुन्दर प्रकाश छा रहा है कि नेत्र चुँधियाने लगते हैं।

अवनि करे टलमल, नाचे प्रमत्त प्रवर

स्थावर जङ्गम करि मत्त।

केवल 'गो' 'गो' करे 'रा' बलिते ढले पड़े

देखि लोकेर चमत्कार चित्त।। 4 ।।

भावार्थ-इस प्रमत्त के नाचने से पृथ्वी डगमगा रही है, जड़ और चेतन मतवाले हो रहे हैं, यह पागल केवल 'गो' 'गो' उच्चारण कर रहा है, परन्तु 'रा' कहते ही पृथ्वी पर गिर पड़ता है (अर्थात् 'गोरा' नाम ठीक तरह से बोल नहीं पाता है) लोग इसे देखकर आश्चर्य-चकित हो रहे हैं।

अजस्त्र नेत्र धाराय धोये जीवेर हृदय

जगाय तथा गौर रसराज ।

फिरे जीवेर द्वारे–द्वारे दन्ते तृण गले वास करे
जीव बन्धु के एइ महाराज? ।। 5 ।।

भावार्थ–इसके नयनों से आँसुओं की अविरल धाराएँ बह रही हैं जिनके द्वारा यह जीवों का हृदय धोकर उसमें 'गौर' रसराज का उदय करा रहा है। यह जीवों का परम बन्धु महाराज कौन है? जो कि दाँतों में तिनका व गले में वस्त्र डालकर जीवों के द्वार–द्वार पर घूम रहा है।

बले तोदेर पाये पड़ि मुखे बल गौरहरि
आमि बिकाइव चिरतरे।
के एइ महान प्राण मार खेये देन प्रेम
केंदे केंदे जीवेर द्वारे द्वारे ।। 6।।

भावार्थ–वह यह कह रहा है कि मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ एक बार मुख से गौरहरि तो बोलो, मैं इसके फलस्वरूप चिरकाल के लिए तुम्हारे हाथों बिक जाऊँगा। यह महान प्राण (महापुरुष) भला यह कौन है? जो कि जीवों के द्वार द्वार पर जाकर भी सबको अमूल्य प्रेम धन लुटा रहा है।

जय नित्यानन्द राम सर्वानन्द सुखधाम
जय जय करुणा निकेतन।
संगे सब परिकर प्रेमे मत्त महावीर
पाषण्ड दलने अग्रगण्य ।। 7 ।।

भावार्थ–(अब इस पागल का परिचय देते हुए कहते हैं) कि समस्त आनन्द व सुख के धाम 'नित्यानन्द राम' की जय हो तथा उनकी करुणा रूपी ध्वजा की जय हो, जय हो। साथ में सब पार्षदगण प्रेमोन्मत्त एवं महान वीर हैं तथा पाषण्ड का दलन करने में अग्रणी हैं।

श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु के पार्षद भी अद्भुत शक्ति से सम्पन्न हैं, निताईचाँद ने सबको अपने समान शक्तिशाली बना दिया है। जिसके प्रभाव

फिरे जीवेर द्वारे-द्वारे दन्ते तृण गले वास करे
जीव बन्धु के एइ महाराज? ।। 5 ।।

भावार्थ-इसके नयनों से आँसुओं की अविरल धाराएँ बह रही हैं जिनके द्वारा यह जीवों का हृदय धोकर उसमें 'गौर' रसराज का उदय करा रहा है। यह जीवों का परम बन्धु महाराज कौन है? जो कि दाँतों में तिनका व गले में वस्त्र डालकर जीवों के द्वार-द्वार पर घूम रहा है।

बले तोदेर पाये पड़ि मुखे बल गौरहरि
आमि बिकाइव चिरतरे।
के एइ महान प्राण मार खेये देन प्रेम
केंदे केंदे जीवेर द्वारे द्वारे ।। 6।।

भावार्थ-वह यह कह रहा है कि मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ एक बार मुख से गौरहरि तो बोलो, मैं इसके फलस्वरूप चिरकाल के लिए तुम्हारे हाथों बिक जाऊँगा। यह महान प्राण (महापुरुष) भला यह कौन है? जो कि जीवों के द्वार द्वार पर जाकर भी सबको अमूल्य प्रेम धन लुटा रहा है।

जय नित्यानन्द राम सर्वानन्द सुखधाम
जय जय करुणा निकेतन।
संगे सब परिकर प्रेमे मत्त महावीर
पाषण्ड दलने अग्रगण्य ।। 7 ।।

भावार्थ-(अब इस पागल का परिचय देते हुए कहते हैं) कि समस्त आनन्द व सुख के धाम 'नित्यानन्द राम' की जय हो तथा उनकी करुणा रूपी ध्वजा की जय हो, जय हो। साथ में सब पार्षदगण प्रेमोन्मत्त एवं महान वीर हैं तथा पाषण्ड का दलन करने में अग्रणी हैं।

श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु के पार्षद भी अद्भुत शक्ति से सम्पन्न हैं, निताईचाँद ने सबको अपने समान शक्तिशाली बना दिया है। जिसके प्रभाव

से वे सभी प्रेम वितरण करने में व दुष्ट मनुष्यों की दुष्टता, पाप व अपराधों का नाश करने में सक्षम हैं। श्रीचैतन्य भागवत में वर्णन आता है कि निताईचाँद के पार्षदगण ऐसे अलौकिक कार्य करते थे कि लोग दाँतों तले उँगली दबा लेते, जैसे यवनों से हरिनाम लिवाना, शेरों को थप्पड़ मारना व उनका स्वभाव बदल देना, वृक्षों को जड़ से उखाड़ना, वृक्षों के पत्तों पर नृत्य करना इत्यादि लीलाएँ वे अक्सर किया करते थे।

वसुधा जान्हवा प्राण पद्मा हाड़ाई नन्दन
हा हा वीरचन्द्रेर जनक ।
अहैतुकी कृपा गुणे मत्त कैले जगत जने
मोरे केन वाम चन्द्रमुख ।। 8।।

भावार्थ–श्रीमति वसुधा देवी एवं जान्हवा देवी जी के प्राणवल्लभ, मैया पद्मावती व बाबा हाड़ाई पण्डित के प्यारेलाल श्रीयुत वीरचन्द्र प्रभु के पितृदेव हे निताइ दयाल! आपने अपनी अहैतुकी कृपा द्वारा संसार के जीवों को प्रेम रस का पान कराकर मतवाला बना दिया परन्तु प्रभु आपने अपने इस दास को वंचित क्यों रखा हुआ है? मुझसे अपना मुखचन्द्र क्यों फेरे हुए हैं?

गौराङ्ग मत्त मधुपेर विचित्राद्भुत कमल
गौर वशीकरण महौषधि ।
जय नित्यानन्द नाम अखिल रसेर धाम
स्फुरूक जिह्वाय निरवधि ।। 9।।

भावार्थ–हे नित्यानन्द प्रभु के आनन्द व मंगलमय नाम! आपकी जय हो, आप श्रीगौराङ्ग महाप्रभुरूपी मतवाले भौंरे के लिए अत्यन्त आश्चर्य जनक कमल के समान हो (अर्थात् आप श्रीमन्महाप्रभु जी को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेते हो) एवं गौर-सुन्दर को वश में करने वाली एक महान औषधि हो (जो भाग्यशाली जन आपका आश्रय लेते हैं गौर सुन्दर सहज ही

उनके वशीभूत हो जाते हैं)। इस प्रकार की अचिन्त्य शक्तियों से सम्पन्न हे 'नित्यानन्द नाम' आप कृपा करके मेरी जिह्वा पर निरन्तर स्फुरित होते रहें (अर्थात् मैं सदा नित्यानन्द प्रभु का परम पवित्र नाम उच्चारण करता रहूँ)।

कलिहत जीवों के उद्धार के लिए निताइचाँद के नाम के सिवाय और कोई सरल उपाय नहीं है । इस नाम को ग्रहण करने से 'रसराज–महाभाव' स्वरूप भगवान् गौरसुन्दर की कृपा द्वारा सुदुर्लभ पञ्चम पुरुषार्थ श्रीकृष्ण प्रेम की प्राप्ति तुरन्त हो जाती है ।

प्रेमे मत्त महाबली डाके दुइ बाहु तूलि
आय आय के आछे पतित ।
आमार विश्वम्भर अवतारे बिलाइव अविचारं
प्रतिज्ञा भङ्ग करिले वञ्चित ।। 10 ।।

भावार्थ–प्रेम मतवाले, महाबलवान प्रेमदाता निताइचाँद अपनी दोनों आजानुलम्बित भुजाओं को उठाकर पुकार रहे हैं, अरे पतित जीवो आओ! मेरे विश्वम्भर गौरसुन्दर के अवतार में, मैं तुम्हें बिना विचारे प्रेम दान दूँगा देखना कोई भी जीव प्रेम दान से वञ्चित न रह जाय, नहीं तो मेरे प्रभु की (सब जीवों का उद्धार करने की) प्रतिज्ञा भंग हो जायेगी।

पतित के धरि कोले भासे निताइ नेत्र जले
बले 'बल' बल त्वरा करि ।
कोथाय के पतित आछे यदि बाद पड़े पाछे
रुष्ट हवे प्राण गौरहरि ।। 11 ।।

भावार्थ–पतित जीवों को आलिंगन करके एवं उन्हें नेत्र जल (आँसुओं) से भिजाते हुए निताइ दयाल कह रहे हैं कि (भैया) जल्दी बताओ और पतित जीव कहाँ हैं? यदि कोई जीव प्रेमदान से वञ्चित रह गया तो मेरे प्राण जीवन धन गौरहरि मुझसे रूठ जायेंगे। (अतः तुरन्त मुझे पतित जीवों के पास ले

चलो, यही कारण है कि निताइचाँद को 'पतित खोजा' अर्थात् 'पतितों का ढूँढ़-ढूँढ़ कर उद्धार करने वाला', 'निश्चित तारने वाला ईश्वर' कहा गया है।

नाम प्रेमे मातावार दियेछेन अधिकार
प्रभु मोर करिया करुणा ।
काँदिया निताई कय यदि के वञ्चित हय
तार नामे लागिवे कालिमा ।। 12।।

भावार्थ-"मेरे प्रभु गौरसुन्दर ने जीवों पर दया करके सबको 'नाम-प्रेम' में मतवाला बना देने का मुझे अधिकार दिया है" निताइ दयाल रोते-रोते कह रहे हैं कि अगर कोई जीव इस नाम प्रेम दान से वञ्चित रह गया तो मेरे प्रभु के (विश्वम्भर) नाम में कलंक लग जायेगा।

उपरोक्त तीनों पयारों में निताईचाँद की जीवोद्धार के लिए अपूर्व करुणा का दिग्दर्शन कराया गया है, जो कि तीनों लोकों में अन्यत्र दुर्लभ है।

शिरे रक्तधारा बहे तबु बुके धरि कहे
भज मोर गौराङ्ग सुन्दर ।
अधम पतित बन्धु के एइ करुणा-सिन्धु
जीव दुःखे सदाइ कातर ।। 13 ।।

भावार्थ-इसके सिर से खून की धारा बह रही है, फिर भी यह जगाई-माधाई (पतित जीवों को) हृदय से लगाकर कह रहा है कि मेरे गौराङ्ग सुन्दर का भजन करो । जीवों के दुःख से दुखी अधम और पतितों का बन्धु, दया का समुद्र, भला यह कौन है ?

प्रेमानन्दे मातोयारा निशि दिशि जपे गोरा
पतितोद्धारे संकल्प एकान्त ।
गौर प्रेम रसेर भाण्ड माताल विश्व ब्रह्माण्ड
महिमाय गौराङ्ग विस्मित ।। 14।।

भावार्थ-प्रेमानन्द में उन्मत्त निताइ दयाल रात दिन 'गोरा' 'गोरा' जपते रहते हैं पतित जीवों का उद्धार करने का उनका एकमात्र संकल्प है। गौर प्रेम के मूर्तिमान स्वरूप (श्रीनिताइ दयाल) समस्त विश्व ब्रह्माण्ड को प्रेमोन्मत्त कर रहे हैं, उनकी इस महिमा को देख स्वयं गौरसुन्दर भी आश्चर्य चकित हो रहे हैं।

पागल हयते जदि चाओ पागल पदे शरण लओ
पागल नामे सदा कर रति ।
दूरे जावे पागलामि पावे पागलेर स्वामी
पागल प्रेमार परिणति ।। 15 ।।

भावार्थ-यदि तुम भी पागल होना चाहते हो तो इस पागल शिरोमणि अवधूत निताइचाँद की शरण लो एवं इनके नाम से हमेशा प्रेम करो। ऐसा करने से तुम्हारा (मायामय संसार सम्बन्धी) पागलपन दूर हो जायेगा एवं इस पागल के स्वामी भगवान् गौरसुन्दर की तुम्हें प्राप्ति हो जायगी। इस पागल के संग प्रेम करने का यह दिव्य परिणाम है।

एइ एक अवतार नाहिक विचार जाँर
डुबाइते सबे मात्र जाने ।
अनर्गल प्रेम वन्या आनि धरा कैल धन्या
मत्त सबे प्रेमामृत पाने ।। 16 ।।

भावार्थ-यही एकमात्र ऐसे अवतार हैं जो कि बगैर किसी (पात्रापात्र के) विचार के केवल सबको (प्रेमामृत समुद्र में) डुबाना ही जानते हैं। अद्भुत प्रेम की नदी को लाकर इन्होंने इस पृथ्वी को धन्य कर दिया जिसमें प्रेमामृत रस प्रवाहित हो रहा है जिसे पान करने से सब प्रेम में मतवाले हो रहे हैं।

हेन दयार ठाकुर जे छाड़ि भजये आर
जन्मिया से नाहि मेल केने ।
हस्तेर चिन्तामणि छाड़ि रजत पीछे मरे दौड़ि
धिक् धिक् ए तार जीवने ।। 17 ।।

भावार्थ-ऐसे दयामय ठाकुर को छोड़कर जो अन्य को भजता है उसे तो जन्म लेते ही मर जाना उचित था अर्थात् उसका तो जीवन धारण करना ही व्यर्थ है, क्योंकि हाथ में चिन्तामणि के रहते हुए भी वह चाँदी के पीछे दौड़-दौड़ कर मर रहा है, उसके जीवन को बारम्बार धिक्कार है। (चिन्तामणि द्वारा कितनी ही मात्रा में कोई भी मणि, माणिक्य, हीरा, मोती व बहुमूल्य वस्तुएँ मन में सोचते ही तुरन्त प्राप्त हो जाती हैं, सो उसके पास होने पर सामान्य चाँदी के लिए इधर-उधर दौड़ना बड़ी भारी मूर्खता ही है, ठीक इसी प्रकार परम करुण निताइचाँद जैसे प्रभु को छोड़कर अन्य देवी देवता का भजन करना बहुत बड़ी गलती है।)

मन्दिर जार थाके बुके तार कि ठाकुर दूरे थाके
विहार भूमि निताइ सुन्दर ।
उदिये हृदय माँझ छूटे गोरा रसराज
भावोन्मादे कराय विभोर ।। 18।।

भावार्थ-जिसके हृदय में मन्दिर विराजमान हो, भला ठाकुर क्या उससे दूर रह सकते हैं? इसी प्रकार हमारे निताइ सुन्दर श्रीमन्महाप्रभु के विलास मन्दिर एवं विहार भूमि स्वरूप ही हैं। ऐसे निताइ दयाल के हृदय में उदय होते ही रसराज गौरसुन्दर भी अपना स्वरूप प्रकट कर देते हैं तथा उस निताइचाँद के ध्यान व स्मरण में तत्पर जीव को भावोन्माद में विभोर कर देते हैं।

मुखे बल नित्यानन्द प्रेमानन्दे हइया अन्ध
प्रवेश कर निकुञ्ज महले ।
केन साधने मर भाई साधने कि से निधि पाई
लभ्य केवल निताइ कृपा बले।। 19 ।।

भावार्थ-अरे भाई तू मुख से 'नित्यानन्द' नाम का उच्चारण कर जिसके प्रभाव से तू प्रेमानन्द रस समुद्र में निमग्न होकर प्रेमान्ध हो जायगा अर्थात्

संसार का मायिक स्वरूप विलुप्त होकर तू बाह्यज्ञान शून्य हो उठेगा तथा ऐसी अवस्था में तू अनायास ही निकुञ्ज महल में (श्रीयुगलकिशोर की निकुञ्ज लीला में) प्रवेश प्राप्त करेगा। अरे भाई तू साधनों में क्यूँ मर रहा है। भला यह धन क्या साधन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है? यह धन तो केवल निताइ कृपा बल द्वारा ही मिल सकता है नहीं तो यह ब्रह्मादि देवताओं द्वारा भी दुष्प्राप्य है। इस विषय में ठाकुर वृन्दावनदासजी ने भी कहा है-
''गोपीयों का प्रेम जो श्रीमद्भागवत में वर्णन किया गया है। वह केवल नित्यानन्द प्रभु द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।''

गोरा गुणे झूरे झूरे ब्रज लीलाय प्रवेश करे
हइया श्री राधिका किङ्करी ।
पुकारे शास्त्र महाजन नाहि नाहि आर गति आन
भज केवल निताइ काण्डारी ।। 20।।

भावार्थ-प्रेम प्राप्ति के उपरान्त वह भाग्यशाली जीव गौरसुन्दर के गुणों के स्मरण में विभोर होकर विलाप करते हुए, झुरता रहता है (प्रभु प्रेम की वह स्थिति जब रोते-रोते आँसू भी नहीं निकलते एवं अन्दर-अन्दर घुट-घुट कर प्रेमीजन क्रन्दन करता रहता है तथा उसमें धीमी-धीमी सुलगती हुई आग की तरह तिल-तिल कर के जलता रहता है, उसे झुरना कहते हैं) इस प्रकार क्रन्दन करते-करते उस प्रेम प्राप्त जीव का निज स्वरूप (राधादासी स्वरूप) जाग्रत हो जाता है तथा वह श्रीराधामाधव भगवान की अष्टकालीन, नित्य ब्रजलीला में प्रवेश कर जाता है। शास्त्र एवं महापुरुष पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि जीवों को भवसमुद्र से पार करने वाले जीवोद्धारक ऐसे निताइचाँद का ही भजन करो, इसके सिवाय भवसागर पार करने का और कोई उपाय नहीं है।

भाई तोदेर पाये पड़ि बलि एइ कर जूड़ि
ना जाइयो ओ पागल पास ।
लागिले तार वातास हवे तोमार सर्वनाश
केंदे केंदे तरुतले वास ।। 21।।

भावार्थ-अरे भाई मैं हाथ जोड़कर व तुम्हारे पाँव छूकर प्रार्थना करता हूँ कि इस पागल के समीप न जाना। अगर इसकी हवा भी तुम्हें लग गई तो तुम्हारा सर्वस्व नष्ट हो जायगा तथा रोते हुए तुम्हें वृक्षों के नीचे वास करना पड़ेगा।

गौड़ पानिहाटि ग्रामे कि मन्त्र पड़िल काने
रघुनाथेर ए कि दशा हल।
महैश्वर्य परिहरि आहार निद्रा त्याग करि
कुण्ड तीरे काँदे निरन्तर ।। 22 ।।

भावार्थ-(उपरोक्त चेतावनी का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि) गौड़देश के पानिहाटि नामक ग्राम में (इस अवधूत शिरोमणि ने) रघुनाथदास गोस्वामी जी के कान में न जाने ऐसा क्या मन्त्र पढ़ा कि उनकी ऐसी विचित्र दशा हो गई कि वे अपने महान् ऐश्वर्य (संसार के समस्त सुखों) का परित्याग करके खाना-पीना व सोना भूलकर श्रीराधाकुण्ड के किनारे निरन्तर विलाप करते रहे। (श्रीयुत रघुनाथदास गोस्वामी जी का विलाप (विलाप कुसुमाञ्जलि) नामक ग्रन्थ में वर्णित है।)

देखिते एत सुन्दर अन्तरे महा जादूकर
ओझार छेले महा इन्द्रजाली।
एक बार जे दिके हेरे डुबाय सचराचरे
सृष्टिकर्ता काँदे शिर धरि ।। 23 ।।

भावार्थ-हाड़ाई ओझाजी का सुपुत्र यह अवधूत इतना सुन्दर है कि जो इसे एक बार देख लेता है, उसके ऊपर यह अजीब सा जादू कर देता है। इस प्रकार यह महान् जादूगर व महान् इन्द्रजाली एक बार भी जिस ओर दृष्टिपात करता है उसी ओर समस्त जड़ चेतन को प्रेम रस की बाढ़ में डुबा देता है जिसके कारण संसार की रचना करने वाले ब्रह्माजी सिर पकड़ कर रोने लगते हैं।

यमेर द्वारे लागिल ताला सबे प्रेमे मातोयारा
कोथा थेके एल एइ अवधूत ।
अद्वैत आचार्य वर्य निमाइ पंडित राज
सबार बुद्धि कैल विपरीत ।। 24 ।।

भावार्थ-(सब पापियों का उद्धार हो जाने से) यमराज के द्वार पर ताला लग गया है, सब जीव प्रेमरस में मतवाले हो रहे हैं। यह अवधूत न जाने कहाँ से आ पहुँचा कि आचार्य श्रेष्ठ श्रीअद्वैत प्रभु एवं पण्डितराज श्रीनिमाइचाँद आदि से लेकर सबकी बुद्धि इसके आते ही उल्टी हो गई।

महा माताल जगाई मधाई नाचे ता ता थेई थेई
मद्यपराज अवधूत संगे ।
नाचे ठाकुर हरिदास आचार्यरत्न श्रीनिवास
गौराङ्ग अद्वैत नाचे रंगे ।। 25।।

भावार्थ-(इस पागल अवधूत ने सबको ऐसा उन्मत्त कर दिया है कि सभी मतवाले होकर इसके साथ नाच रहे हैं) इस मद्यपराज अवधूत के साथ महामत्त जगाई मधाई ता ता थेई थेई करके नाच रहे हैं। ठाकुर श्रीहरिदास एवं श्रीनिवास आचार्य जी भी नाच रहे हैं। श्री गौराङ्गसुन्दर और श्रीअद्वैत प्रभु भी आनन्द विभोर होकर नृत्य कर रहे हैं।

विद्यार विलास भूमि नवद्वीप ग्राम खानि
यत्र महा महा अध्यापक।
से पागल खाना हल यदवधि ए पागल एल
संख्या नित्य बाढ़ये अधिक ।। 26।।

भावार्थ-नवद्वीप धाम जो कि विद्या पठन का महाकेन्द्र था एवं उसमें बड़े-बड़े विद्वान् अध्यापक निवास करते थे, इस पागल के आते ही वह पागलों का केन्द्रं (पागलखाना) बन गया तथा दिन प्रति दिन उसमें पागलों की संख्या बढ़ती चली गई।

निरंकुश गजराज प्रमत्त केशरि वर्य
गौरे बाँधिवारे एइ फाँस ।
निताइ नाम कमल फुटये हृदये जाहार
छूटये गोरा हइया लालस ।। 27 ।।

भावार्थ-निरंकुश गजराज एवं मतवाले शेर के समान श्रीमन्महाप्रभु गौरसुन्दर को बाँधने के लिए जो पाश के समान है, ऐसा 'निताइ' नाम रूपी कमल जिस भाग्यशाली जीव के हृदय में प्रस्फुटित होता है, उस हृदय में (चुम्बकाकृष्ट लौह की भाँति) श्रीगौरसुन्दर (निताइ नाम रसास्वादन की) लालसा से युक्त होकर दौड़े चले आते हैं । ऐसी अद्‌भुत महिमा है श्री निताइचाँद के मधुर नाम की)।

अनुरागे रक्तवर्ण विह्वलेर अग्रगण्य
रस घोरे दिगम्बर भोरा ।
घूर्णित नयन युगल वर्षे गौर अनुराग
दिग विदिग नाहि आत्म हारा ।। 28।।

भावार्थ-(इस पयार में श्रीनिताइचाँद की उन्मत्तता का दिग्दर्शन कराया गया है)-गौर अनुराग रससिन्धु में सदा निमग्न रहने के कारण(श्रीनिताइ दयाल के) श्रीअंगों से लाल रंग की कान्ति छिटक रही है, अत्यन्त विह्वल होने के कारण उन्हें अपने वस्त्रादिक का जरा भी भान नहीं है अतः वे दिगम्बर हो रहे हैं। उनके झूमते हुए नेत्रों से अनुराग रस की वर्षा हो रही है तथा निरन्तर आत्महारा (देहानुसन्धान रहित) रहने के कारण वे दिशाओं के ज्ञान से शून्य हो रहे हैं।

जैसे कोई मदान्ध मनुष्य पूरी तरह अपने आपको व आस-पास की वस्तुओं को भूल जाता है, ठीक उसी प्रकार प्रेमरस मदिरा पीकर प्राणधन निताइचाँद पूर्ण-रूपेण उन्मत्त हो रहे हैं।

श्रीगौराङ्ग प्रेमेर सीमाहीन पारावार
अतीव गम्भीर अन्तहीन ।
ताई सदा विघूर्णित भावतरङ्गे उद्वेलित
उन्मादना बाढ़े अनुक्षण ।। 29 ।।

भावार्थ-(इस पयार में निताइचाँद को एक अद्भुत रस युक्त एवं गम्भीर समुद्र के रूप में चित्रित किया गया है)। ये निताइ दयाल श्रीगौराङ्ग प्रेमरस से परिपूर्ण अत्यन्त गम्भीर, सीमाहीन एवं अन्तहीन समुद्र के समान हैं (यह समुद्र) सदा घूर्णायमान (भँवर युक्त) रहता है, भाव तरंगें इसमें उच्छलित होती रहती हैं। तथा यह प्रतिक्षण उन्मादना (पागलपन) की वृद्धि करता रहता है। महाजनों के वाक्य हैं- 'गौर प्रेमेर मूर्ति निताइ' अथाह गौर प्रेमरस समुद्र के मूर्तिमान विग्रह स्वरूप हैं प्राण-जीवन-धन निताइचाँद ।

करुणार धारा बय जीवेर भाग्य समुदय
जे ना करे से धाराय स्नान।
सेइ महामन्दमति तार कभू नाहि गति
सेइ पापी जिये कि कारण ।। 30 ।।

भावार्थ-जीवों के सौभाग्य उदय हुए हैं जिसके फलस्वरूप करुणा की धारा बह रही है, जो लोग इस धारा में स्नान नहीं करते वे अत्यन्त नीच बुद्धि वाले हैं, वे पापी किस कारण जीवित रहते हैं अर्थात् उनका तो मर जाना ही अच्छा है ।

रास विलासेर परिणति राइ कानु एकाकृति
युगलोज्ज्वल रसेर निर्यास।
सेइ गौरेर अभिन्न देह गौराङ्ग सेवा विग्रह
निताइ अति निगूढ़ रहस्य ।। 31।

भावार्थ-(इस पयार में गौरसुन्दर के निगूढ़ तत्त्व का दिग्दर्शन कराकर उनकी निताइचाँद से अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है)। श्रीमन्महाप्रभु गौरसुन्दर 'रास विलास की परिणति' (परिवर्ति स्वरूप जैसे दूध की परिणति दही होती है) 'राधामाधव के मिलित विग्रह' (जैसे पनीर व चीनी को मिलाकर रसगुल्ला बनाया जाता है तथा उसका स्वाद पनीर व चीनी के मिश्रण कच्चा गोला से कहीं श्रेष्ठ व चमत्कारी होता है, ठीक उसी प्रकार राधारानी एवं श्यामसुन्दर के अद्भुत मिलन के मूर्तिमान स्वरूप हैं प्यारे गौरसुन्दर) एवं 'युगलकिशोर के उन्नत उज्ज्वल रस के मन्थन से प्रादुर्भूत अद्भुत नवनीत अथवा 'चन्द्रमा' के समान हैं (दधि मन्थन द्वारा जैसे नवनीत का प्राकट्य होता है, ठीक उसी प्रकार युगलकिशोर की केलि रस मन्थन के द्वारा श्रीमन्महाप्रभु प्रगट होते हैं, ठीक उसी प्रकार श्रीराधामाधव के अन्तरंग केलि विलास मन्थन के फलस्वरूप इस अद्भुत श्रीगौरचन्द्र का उदय होता है।) ऐसे गौरसुन्दर के अभिन्न स्वरूप हैं श्रीनिताइचाँद जो कि साक्षात् गौरसुन्दर के सेवा विग्रह ही हैं। (सेवा सम्पादन के लिए श्रीमन्महाप्रभु ने ही अलग से स्वरूप धारण किया हुआ है) इस प्रकार श्रीनिताइचाँद का रहस्य निगूढ़ है।

गौराङ्ग माधुर्यार्णव प्रतिक्षणे नव नव
बाढ़े जाँर नाहिक अवधि।
आस्वादे निताइ महाभाग नव नव अनुराग
मिलित माधुरी गोरानिधि।। 32 ।।

भावार्थ-श्रीमन्महाप्रभु श्रीगौराङ्ग सुन्दर श्रीप्रिया प्रियतम युगलकिशोर के परस्पर निबिड़तम मिलन द्वारा उत्पन्न माधुर्य रस के समुद्र के समान हैं जो कि प्रति क्षण नवनवायमान है (नया -नया प्रतीत होता है) एवं निरन्तर बढ़ता ही रहता है, इसकी कोई अवधि नहीं है। परम सौभाग्यशाली निताइचाँद इस माधुर्य रस समुद्र का नित्य नवायमान अनुराग पूर्वक निरन्तर आस्वादन करते रहते हैं।

गौराङ्ग प्रेम आधार प्रभू निताइ सुन्दर
तार पद आश्रय जे करे ।
पाय युगल प्रेम रस प्राण गौराङ्ग करे वश
सदा सेवा समुद्रे साँतारे ।। 33 ।।

भावार्थ-प्रभु निताइसुन्दर गौराङ्ग प्रेम के आधार स्वरूप हैं। जो इनके श्रीचरणों की शरण लेते हैं वे युगल प्रेम रस को प्राप्त करते हैं प्राण गौराङ्ग को वशीभूत कर लेते हैं एवं हमेशा श्रीगौरगोविन्द की अष्टकालीन सेवा रूपी समुद्र में तैरते रहते हैं अर्थात् दोनों लीलाओं में सिद्ध देह द्वारा सेवा का सौभाग्य प्राप्त करते हैं ।

निताइ पदे बिकाइव गौर धने धनी हव
आस्वादिव युगलोज्ज्वल रस ।
ब्रह्मा शिवेर दुर्लभ अचिरे हवे सुलभ
साधन बिना पूर्ण अभिलाष ।। 34 ।।

भावार्थ-निताईचाँद के चरणकमलों में स्वयं को बेचकर गौर रूपी प्रेमधन को प्राप्त करूँगा, जिस महाधन द्वारा धनवान होकर मैं युगलकिशोर के उज्ज्वल रस का आस्वादन करूँगा। इस प्रकार जो वस्तु ब्रह्माजी एवं शंकरजी को भी दुष्प्राप्य है वह मुझे सहज में ही प्राप्त हो जायेगी एवं बगैर किसी साधन के ही मुझे अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति हो जायेगी।

इस पयार में निताइचाँद की करुणा द्वारा स्वप्न में अप्राप्य सुदुर्लभ श्री श्रीश्रीराधा-माधव के उन्नत उज्ज्वल रस की प्राप्ति के उपाय का दिग्दर्शन कराया गया है। इस वस्तु का दान केवल श्रीमन्महाप्रभु द्वारा ही जीवों को दिया गया है। नहीं तो यह उन्नत उज्ज्वल प्रेम धन तो चिरकाल से किसी को भी प्रदान नहीं किया गया था क्योंकि यह परम गोपनीय एवं निगूढ़ तत्त्व है।

छार माया किवा तार निताइ सर्वस्व जाँर
मग्न सदा गौर प्रेमार्णवे ।
कृतार्थ करे जीवन धन्य करे त्रिभुवन
अधिकारी सेइ गोपी भावे।। 35।।

भावार्थ-निताईचाँद जिसके सर्वस्व हैं तुच्छ माया भला उसका क्या बिगाड़ सकती है वह तो सदा गौर प्रेम रस समुद्र में डूबा रहता है परम दुर्लभ गोपीभाव का अधिकारी बनकर वह भक्त अपने जीवन को कृतार्थ कर ही लेता है, अपितु तीनों लोकों को भी धन्य कर देता है (तीनों लोकों को पवित्र करता हुआ वह जीव, जीवन चरम लक्ष्य को सहज में प्राप्त कर लेता है। निताइचाँद के श्रीचरणों में एकान्तिक निष्ठा का कैसा अपूर्व परिणाम है यह।)

करिवर शुण्ड जिनि बाहुयुग सुवलिनी
हेमदण्ड ताहाते शोभय ।
नील पट्ट परिधान विद्युत मदाभिमर्दन
अङ्ग कान्ति सदा वृद्धि पाय ।। 36।।

भावार्थ-हाथी के सूंड के समान सुन्दर विशाल आजानलुम्बित दोनों भुजाएँ हैं जिनमें सुवर्ण की लाठी सुशोभित हो रही है नीला रेशमी वस्त्र पहने हुए हैं एवं बिजली के गर्व को चूर-चूर करने वाली उनकी अंगकान्ति है जो कि प्रतिक्षण बढ़ रही है।

सुरधुनी तीरे तीरे विहरे सपरिकरे
धन्य धन्य पानि हाटि ग्राम ।
बसाये प्रेमेर हाट करे कत रंगनाट
आकर्षिया गौर गुण धाम ।। 37।।

भावार्थ-(निताईचाँद) अपने परिकरों के साथ गंगाजी के किनारे-किनारे विहार कर रहे हैं। पानिहाटी गाँव धन्यातिधन्य है, जहाँ पर प्रेम का बाजार लगा हुआ है एवं जिसमें वे अनन्त गुणों के सागर गौरसुन्दर को आकर्षित करके अद्भुत नृत्य रंग का आयोजन कर रहे हैं। श्रीयुत निताइचाँद की

नृत्य माधुरी इतनी अद्भुत एवं चित्ताकर्षक है कि उसका आस्वादन करने के लिए स्वयं श्रीमन्महाप्रभु गौरसुन्दर भी खिंचे चले जाते हैं।

नाचे निताइ सुन्दर स्तब्ध सब चराचर
वरिषये पुष्प देवगण ।
ब्रज सखागण माझे जैछे दाऊदादा साजे
तैछे लीला भुवनमोहन ।। 38।।

भावार्थ-श्रीनिताइ सुन्दर नाच रहे हैं जिनके दर्शन करके समस्त जड़ और चेतन स्तब्ध हो रहे हैं, एवं देवगण आकाश से फूल बरसा रहे हैं। ब्रज के सखाओं के मध्य में जैसे बलराम जी शोभायमान होते हैं, ठीक उसी प्रकार श्रीनिताइ दयाल अपने परिकरों के साथ, तीनों लोकों को मोहित करने वाली लीलायें कर रहे हैं ।

मुख पद्म नेत्र पद्म नाभि कर पादपद्म
अंगे अंगे चाँदेर बाजार ।
पद्म चाँद एक ठाँई आनन्देर अवधि नाई
विवर्त विलास रङ्गाधार ।। 39।।

भावार्थ-(कमल का फूल आमतौर पर सूर्योदय द्वारा ही विकसित होता है, परन्तु निताइचाँद के श्रीविग्रह में कमल एवं चन्द्रमा एकत्र शोभायमान हो रहे हैं) मुख-कमल, नेत्रकमल, नाभि कमल, कर-कमल एवं चरणकमल आदि समस्त अंगों में चाँद का बाजार लगा हुआ है। (समस्त श्रीअंगों में कोटानुकोटि चन्द्रमाओं के समान शीतल ज्योत्सना छिटक रही है)। कमल व चन्द्रमा एक ही स्थान पर विराज रहे हैं एवं आनन्द बरस रहा है। इस प्रकार हमारे प्राणधन निताइचाँद विवर्तविलास रंग (राइ कानु, कानुराइ, रमणा रमण, रमण रमणी-जो कि रसराज महाभाव स्वरूप श्रीमन्महाप्रभु का अन्तरंग स्वरूप है) के आधार स्वरूप हैं ।

कबे से सौभाग्य पाव नदिया नगरे जाव
बेड़ाइव भिक्षाझुलि धरि ।
नदि-यार राज पथे जावे संकीर्तन मेते
देखिव कि नेत्रयुग भरि ।। 40 ।।

भावार्थ-कब मेरा ऐसा सौभाग्य होगा कि मैं 'नदिया नगर' में जाकर भिक्षाझोली धारण करके घूमूंगा। जब प्राण-धन निताइचाँद संकीर्तन में उन्मत्त होकर नदिया के राजपथ पर जा रहे होंगे, तब मैं उन्हें क्या नेत्र भरके (एक झलक) देख पाऊँगा।

प्रसादीर माला मोरे दिवे कि आपन करे
प्रभु निताइ करुणार खनि ।
अति उल्लास अन्तरे दिव गुरुदेवेर गले
स्वप्रसादी दिवेन आपनि ।। 41।।

भावार्थ-तब करुणा की खान श्री निताई-चाँद क्या अपने हाथों से मुझे अपनी प्रसादी माला प्रदान करेंगे? अत्यन्त उल्लास हृदय में भरकर उस माला को मैं अपने श्रीगुरुदेव के गले में पहना दूँगा जो पुनश्च मुझे अपनी प्रसादी वह माला प्रदान करेंगे।

इस पयार में रागानुगा भजन मार्ग में श्रीगुरुदेव के आनुगत्य का दिग्दर्शन कराया गया है। स्वयं भगवान के द्वारा कोई भी प्रसादी वस्तु प्राप्त होने पर साधक को सर्वप्रथम उसे श्रीगुरुदेव को अर्पण करना चाहिये एवं श्रीगुरुदेव द्वारा ही उस प्रसादी को लेकर सेवन करना चाहिये।

वीरचन्द्र रामचन्द्र आर जत भक्तवृन्द
श्रीगुरु श्रीगौराङ्ग राम श्रीराधारमण ।
हइया परम प्रीत करि लबे अनुगत
पूर्ण हवे सर्व मनस्काम ।। 42 ।।

भावार्थ-(उस समय) श्रीवीरचन्द्र, श्रीरामचन्द्र आदि भक्तवृन्दों सहित मेरे गुरुजन श्रीयुत 'राम' एवं श्रीयुत 'राधा-रमण देव' मुझ पर परम प्रसन्न होकर अपना आनुगत्य प्रदान करेंगे, जिसके फलस्वरूप मेरी सभी मनो-कामनाएँ पूर्ण हो जायेंगी।

महा प्रचण्ड प्रलय प्रति क्षणे वृद्धि पाय
ताते तूफान अति भयङ्कर ।
कैल जगत छारखार ना रहिल सत्ता-कार
घनघोर वर्षा अनिवार ।। 43 ।।

भावार्थ-परम प्रबल मदमत्तता रूपी महा प्रचण्ड प्रलय जिसमें भोग तृष्णा रूपी तूफान उठ रहा है, निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हो रही है। इसके फलस्वरूप प्राकृतिक सत्ता का लोप होकर, अनर्गल प्रेम वर्षा द्वारा जीवों का (कृष्णदास अथवा राधादासी) जो कि उनका वास्तविक निज स्वरूप है, जग उठा है।

नवद्वीप सरोवरे स्वर्ण पद्मद्वय खेले
भाव वातासे सदा टलटल ।
भकत भ्रमर शत पिये मधू अविरत
तबू तृष्णा बाढ़े निरन्तर ।। 44 ।। ॥

भावार्थ-नवद्वीप धाम एक सरोवर के समान है। जिसमें (निताइगौराङ्ग रूपी) दो सुवर्ण कमल खिले हुए हैं जो कि भाव-रूपी पवन द्वारा चलायमान हो रहे हैं, अद्वैतचन्द्र हुंकार व वायुवेग द्वारा उनकी सुगन्ध का विस्तार कर रहे हैं एवं सैकड़ों भक्त परिकर रूपी भ्रमरगण इन कमलों का मधु निरन्तर पान कर रहे हैं, फिर भी उनकी मधु-पान की तृष्णा निरन्तर बढ़ रही है। यह प्रेम रस ऐसा अद्‌भुत है कि जितना इसे पान करो, इसकी प्यास भी साथ-साथ बढ़ती चली जाती है, प्रतिक्षण में 'तृप्ति' एवं 'प्यास' का साथ-साथ अनुभव होता है।

निताई गौराङ्ग नाचे संकीर्तन रास रचे
सम्मुख गर्जये सीतानाथ ।
नरहरि गदाधर दक्षिणे वामे मनोहर
मण्डलाकारे भक्त अगणित ।। 45 ।।

भावार्थ-संकीर्तन रास में 'निताई गौरांग' दोनों भैया नाच रहे हैं एवं श्रीअद्वैत प्रभु सामने प्रेम गर्जना कर रहे हैं। बाँई ओर गदाधर एवं दाहिनी ओर नरहरि सरकार सहित अगणित भक्तगण चारों ओर घेरकर मण्डलाकार में नृत्य कर रहे हैं । आज सीतानाथ का स्वप्न साकार हुआ है। उन्होने ही रो-रो कर गौराङ्ग महाप्रभु को पृथ्वी पर प्रकट कराया है।

रसराज महाभाव, एकाधारे आविर्भाव
नदिया विहारी गौरहरि ।
ताँर भाव अनुकूल सेवा करे निरन्तर
अभिन्न तनु निताइ श्रीहरि ।। 46।।

भावार्थ-नदिया विहारी गौरसुन्दर-रसराज श्यामसुन्दर एवं महाभाव स्वरूपिणी राधा महारानी के परस्पर मिलित विग्रह स्वरूप हैं। निताइ 'श्रीहरि' जो कि उनके अभिन्न स्वरूप हैं, उनके भाव के अनुकूल निरन्तर सेवा परायण रहते हैं। जब गौरसुन्दर जिस भाव से विभावित होते हैं ठीक उसी के अनुरूप बनकर निताइचाँद उनकी सेवा करते हैं।

'नागर निताइ, नागरी निताइ'

पिये गौर प्रेम मद सदाइ उन्मादे अन्ध
उत्तम अधम नाहिं बाछे ।
लक्ष्मीर अप्राप्य प्रेम वैकुण्ठ अज्ञात धन
अविचारे द्वारे द्वारे जाचे ।। 47 ।।

भावार्थ-गौर प्रेमरूपी मदिरा का पान करके (निताइचाँद) सदा ही उन्मत्त एवं प्रेमान्ध बने रहते हैं। (प्रेमदान से) वे उत्तम अथवा अधम किसी को भी वञ्चित नहीं रखते। लक्ष्मीजी को भी प्राप्त नहीं होने वाला एवं वैकुण्ठ धाम के वासियों को भी अज्ञात जो प्रेम धन है उसे (निताइ दयाल) बिना किसी विचार के लोगों के द्वार-द्वार पर जा-जाकर लुटाते हैं (कैसी अद्‌भुत एवं अपार करुणा है उनकी जीवों के प्रति।)

अत्यधिक करि पान निरन्तर हत ज्ञान
विधि निषेधातीत व्यवहार ।
कभू उठे, कभू पड़े कभू भासे गंगा नीरे
कभू नाचे हये दिगम्बर ।। 48 ।।

भावार्थ-(गौर प्रेमरस रूपी मद का अत्यधिक पान करने के कारण) श्रीनिताइ-चाँद (निरन्तर बाह्यज्ञान शून्य हो रहे हैं एवं उनका व्यवहार विधि निषेध से परे हो रहा है। कभी उठते हैं, कभी भूमि पर गिर पड़ते हैं, कभी गंगाजल में तैरने लगते हैं एवं कभी दिगम्बर (वस्त्रहीन) होकर नृत्य करने लगते हैं।

गौराङ्ग रस सागर गौराङ्‌ग रस आगर
श्रीगौराङ्‌ग चाँदेर चकोर ।
प्रेमे मत्त महाबली चले दिग विदिग दलि
गौर प्रेम रसेर बादर ।। 49 ।।

भावार्थ-(श्रीनिताइचाँद) गौरांग रस (रसस्वरूप गौर-सुन्दर) के समुद्र हैं एवं गौराङ्ग रस के भण्डार हैं तथा श्रीगौराङ्ग रूपी चन्द्रमा के चकोर हैं। प्रेमोन्मत्त, महाबलवान (निताइ दयाल) चारों दिशाओं का दलन करते हुए (सब दिशाओं को प्रेमरस की बाढ़ में डुबाते हुए) चले जा रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि वे गौर प्रेम की वर्षा करने वाले बादल ही हैं । (ऐसे करुणामय निताईचाँद भी विष्णुप्रिया-गौराङ्गयुगल दर्शन की आस लिये उनके गृह मंदिर में गये थे ।)

नाहिं जार ओर पार ब्रह्मा शिवेर अगोचर
जीव छार काहा पावे अन्त ।
गरजत निरन्तर क्षीरार्णवे जैछे मन्दर
विवर्धमान उर्मि शत शत ।। 50 ।।

भावार्थ-(श्रीनिताइ दयाल) ब्रह्मा एवं शिव से भी अगोचर हैं एवं उनका कोई आर-पार नहीं है फिर भला तुच्छ जीव उनका अन्त कैसे पा सकता है? जैसे क्षीरसागर के मन्थन के समय मन्दराचल पर्वत के हिलने से भयंकर शब्द होता है ऐसे जो निरन्तर उन्मत्त होकर गरज रहे हैं एवं उस (नित्यानन्द रूपी) रस समुद्र में शत-शत लहरें निरन्तर उच्छलित एवं वृद्धि को प्राप्त हो रही हैं ।

नित्यानन्द दासेर दास तार आशु पूरे आश
हा हा राम श्रीराधारमण ।
दिये से चरण स्पर्श करिले मोरे हताश
दुःखे मरि नैल साध पूर्ण ।। 51।।

भावार्थ-हा हा परमगुरु श्रीयुत रामदास बाबाजी महाराज एवं परात्पर गुरु श्रीयुत राधारमण चरणदास देव-बड़े बाबाजी महाराज निताइचाँद के दासानुदासों की आशा तो शीघ्र ही पूरी हो जाती है फिर क्या कारण है कि आप जैसे परम समर्थ एवं करुणासागर गुरुजनों के श्री चरणों की शरण प्राप्त होने के बावजूद भी मैं हताश ही रहा एवं मेरे मन की साध पूरी न होने के कारण मैं दुःखी होकर मर रहा हूँ ।

श्रीराधारमण राम विचित्राद्भुत कल्पद्रुम
जय जय महिमा अपार ।
पेये से चरणधन वञ्चित शेखराधम
दिने दिने कुमति प्रबल ।। 52 ।।

भावार्थ-हे 'श्री श्रीराधारमण देव' एवं 'श्री श्रीराम' आप दोनों तो विचित्र एवं अद्भुत कल्पवृक्ष के समान है-आपकी अपार महिमा की जय हो, जय हो।

आप के श्रीचरणकमल रूपीधन को प्राप्त करके भी यह अधम दास प्रेम धन से वञ्चित ही है एवं दिन प्रति दिन इसकी कुबुद्धि प्रबल होती जा रही है।

उपरोक्त दोनों पयारों में गुरूजनों के प्रति आक्षेप (उलाहना) निवेदन किया गया है जो कि हृदय की तीव्र उत्कंठा एवं व्याकुलता का परिचायक है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि परम पुरुषार्थ प्रेमधन की प्राप्ति एवं प्राप्ति के उपरान्त उसका भोग करने के लिए ऐसी व्याकुलता होनी परमावश्यक है। इस प्रेम मार्ग में जैसे-जैसे जितनी अधिक वस्तु की प्राप्ति होती जायेगी वैसे-वैसे ही अधिकाधिक व्याकुलता भी बढ़ती चली जाएगी ।

केह रामकृष्ण भजे केह गोरा नटराजे
केह भजे वृन्दावनेश्वरी।
शेखरेर जीवन प्राण प्रभु नित्यानन्द राम
सत्य-सत्य बलि बाहु तुलि ।। 53 ।।

भावार्थ-इस पयार में श्रीमान् नित्यानन्द प्रभु के प्रति अपनी ऐकान्तिक निष्ठा का परिचय देते हुए ग्रन्थकार कहते हैं, कोई तो रामकृष्ण का भजन करते हैं, कोई नटराज गौर-सुन्दर का भजन करते हैं एवं कोई वृन्दावनेश्वरी राधारानी का भजन करते हैं परन्तु 'शेखर' के जीवन प्राण तो श्री नित्यानन्द राम (बलराम जी के स्वरूप निताइ दयाल) ही हैं यह मैं बाहु उठाकर सत्य-सत्य कहता हूँ।

सम्प्रदाय साधुशास्त्र सबारे मोर दण्डवत
सबे देह एइ शुभाशीष ।
प्रभू नित्यानन्द राम होउक सर्वस्व मम
अन्यत्र ना चलुक मति लेश ।। 54 ।।

भावार्थ-सभी साधु, शास्त्रों एवं सम्प्रदायों को मेरा दण्डवत प्रणाम है सब मुझे यही शुभाशीर्वाद प्रदान करें कि 'श्री नित्यानन्द राम' प्रभु ही मेरे सर्वस्व हों एवं मेरी बुद्धि लेशमात्र भी अन्यत्र ना भटके (श्रीनिताइचाँद के अतिरिक्त

मैं स्वप्न में भी किसी अन्य का चिन्तन न करूँ।)

कार कथा न शुन मन भज नित्यानन्द राम
तुमि अपराधी बहिर्मुख ।
हेन दयाल नाहि आर केंदे केंदे करे पार
दीने हीने करूणा अधिक ।। 55 ।।

भावार्थ-अरे मन तू किसी अन्य की कथा न सुनते हुए केवल 'नित्यानन्द राम' का भजन कर क्योंकि तुम अपराधी एवं बहिर्मुख हो। ऐसे दयालु और कोई नहीं जो कि जीवों के दु:ख से दुखी होकर रोते-रोते सबको भवसागर से पार करते हैं इनकी करूणा दीनहीन जनों पर विशेष रूप से प्रकाशित होती है।

डुबाय प्रेम पारावारे, किंवा विष दिया मारे
तबु निताइ मोर प्राणपति ।
सबार पदे निवेदन सबे देह एइ दान
ओ चरणे बाढ़े जेन रति ।। 56 ।।

भावार्थ- चाहे मुझे प्रेम समुद्र में डुबायें अथवा विष देकर मारें, तब भी केवल निताईचाँद ही मेरे प्राणनाथ हैं। सबके चरणों में यही प्रार्थना है एवं सब लोग मुझे यही दान दें कि इनके चरणकमलों में मेरी रति अनुदिन बढ़ती रहे।

हय नाहि आर हवार नय हेन प्रेमदाता महाशय
जारे तारे विलाय प्रेम धन ।
मार खेये प्रेम जाचे एमन दयाल आर के आछे
बिने प्रभू नित्यानन्द राम ।। 58 ।।

भावार्थ-ऐसे प्रेमदाता महाशय न तो कभी हुए हैं और न ही भविष्य में होंगे जो कि जिस किसी को (बगैर सुपात्र एवं कुपात्र का विचार किये) प्रेम धन लुटाते हैं। प्रभु नित्यानन्द राम को छोड़कर भला ऐसा दयालु और कौन है, जो कि मार खाकर भी प्रेम दान करते हैं?

दन्ते तृण गले वास करि निवेदिये पाये पड़ि
भज भज ए हेन ठाकुर ।
सर्व्वदु:ख हवे नाश पाइवे परम-उल्लास
लुटिवे गूड़ प्रेमेर भाण्डार ।। 59 ।।

भावार्थ-दाँतों में तिनका दबाकर एवं गले में वस्त्र लपेट कर (अत्यन्त दीनता पूर्वक) मैं तुम्हारे पैरों में पड़कर निवेदन करता हूँ कि ऐसे (परम कृपालु) ठाकुर श्रीनिताइ दयाल का भजन करो, भजन करो। तुम्हारे समस्त दु:खों का विनाश हो जायगा एवं तुम परमानन्द प्राप्त करके गूढ़ प्रेम के भण्डार को स्वेच्छानुसार लूटोगे।

गोलोक गुप्त प्रेम साधन दुर्लभ धन
ब्रह्मा शिवादिर अगोचर ।
हेन से निगूढ़ प्रेम आचाण्डाले करिते दान
निताइ बिना केवा आछे आर ।। 60 ।।

भावार्थ-निताइचाँद को छोड़कर भला ऐसा कौन है जो कि गोलोक धाम में गुप्त, साधन द्वारा दुर्लभ एवं ब्रह्मा शिव द्वारा अगोचर ऐसा अत्यन्त निगूढ़ प्रेम धन चाण्डाल पर्यन्त को प्रदान करते हैं (छोटा, बड़ा ब्राह्मण, चाण्डाल, मूर्ख, विद्वान् आदि का विचार किये बिना दाता शिरोमणि निताइ-चाँद समान भाव से सबको प्रेम धन वितरण करते हैं, लुटाते हैं ।)

प्रेमधन कितना दुर्लभ है इसका अन्दाजा लगाना भी कठिन है-संसार के समस्त ऐश्वर्य, वैभव, चारों प्रकार की मुक्ति देते हुए भगवान जरा भी संकुचित नहीं होते परन्तु प्रेम धन तो वे किसी विशेष अधिकारी भक्त को ही प्रदान करते हैं क्योंकि प्रेम प्रदान करने के बाद उन्हें इस प्रेमी भक्त का गुलाम बनना पड़ता है ।

हे हे तार्किक बुधगण किवा कर संकथन
हे हे साधु सन्यासी वैष्णव ।

आमि कार कथा ना शुनिव निताइ पदे बिकाइव

निताई केवल पतित बान्धव।। 61 ।।

भावार्थ- हे तर्कशील बुद्धिमान् पुरुषो! आप परस्पर क्या चर्चा कर रहे हो? हे साधु संन्यासी एवं वैष्णव गणो! मैं किसी की बात नहीं सुनुंगा एवं निताइचाँद के श्री चरणकमलों में बिक जाऊँगा, **क्योंकि केवल निताइचाँद ही पतितजनों के बन्धु हैं।**

हे साधु वैष्णवगण तोमरा सामर्थ-वान

तोमादेर प्रचुर आछे अर्थ ।

उपयुक्त मूल्यादाने जथा तथा लवे किने

भरसा मोर निताइ सदाव्रत ।। 62 ।।

भावार्थ- हे साधु! वैष्णवगण आप तो सब तरह से समर्थ हैं और आपके पास तो बहुत (साधन-भजन रूपी) धन है जिस के द्वारा उपयुक्त मूल्य देकर आप लोग यथेच्छ वस्तु खरीद सकते हैं परन्तु मुझे तो केवल निताइचाँद के सदाव्रत का ही भरोसा है (जहाँ सबको मुफ्त में प्रेमधन लुटाया जाता है।)

नित्यानन्द सरोवरे गौराङ्ग कमल खिले

राधाकृष्ण मकरन्द पूर्ण।

निताई आश्रय फले जारे श्रीगौराङ्ग मिले

तार कि बाकि युगल चरण।। 63 ।।

भावार्थ-नित्यानन्द रूपी सरोवर में गौराङ्ग रूपी कमल खिला हुआ है जो कि राधा-कृष्ण रूपी मकरन्द से भरा है। निताइचाँद के पदाश्रय द्वारा जिसे श्री गौराङ्ग की प्राप्ति हो जाती है फिर भला युगलकिशोर राधा-माधव की प्राप्ति से वह वञ्चित रह सकता है? (अर्थात् श्रीगौराङ्ग सुन्दर की प्राप्ति होने पर राधामाधव युगलकिशोर तो स्वयं ही मिल जाते हैं, उनकी प्राप्ति के लिए अलग से चेष्टा नहीं करनी पड़ती है)।

अन्य कर्तृक अदत्त वैकुण्ठ अलभ्य वित्त
प्रेमावतार गौरहरि ।
हेन सुदुर्लभ प्रेम जारे तारे कैल दान
भाई निताइ के आज्ञा करि ।। 64 ।।

भावार्थ-अन्य किसी के द्वारा न दिया गया एवं वैकुण्ठ में भी अप्राप्य जो अत्यन्त दुर्लभ उन्नत उज्ज्वल प्रेम धन है उसे प्रेमावतार गौरसुन्दर ने भाई निताइ को आज्ञा देकर उनके द्वारा जिस किसी को (पात्रापात्र विचार किये बिना) प्रदान कर दिया।

दुष्ट जन संहारिते भक्तजन उद्धारिते
ऐसेछिल सब अवतार ।
अहिंसा व्रत आचरि प्रेमे निताइ गौरहरि
जागाइल स्वरूप सबार।। 65।।

भावार्थ-अन्य सभी अवतार दुष्टजनों का संहार व भक्तजनों का उद्धार करने के लिए पृथ्वी पर पधारे परन्तु प्रेममय निताइ-गौराङ्ग ने अहिंसा व्रत का आचरण करते हुए सबके स्वरूप को जगा दिया (जीव का नित्य स्वरूप है राधादासी व कृष्णदास का, जिसे भूलकर वह जन्म जन्मान्तरों से भटक रहा है, परम करुण निताइ गौर जीव का देहाभिमान दूर कर उसका नित्य राधादासी रूप जागृत कर देते हैं जिससे वह अपने निज रूप से युगलकिशोर की नित्य लीला में प्रवेश प्राप्त करके जीवन का चरम लक्ष्य प्राप्त कर लेता है।)

जार गले छिल माया फाँसी तारे कैले राधादासी
बलिहारी करुणा प्रबल ।
स्थावर जङ्गम जत करिले प्रेमे उन्मत्त
ए जे स्वरूप जागान अवतार ।। 66।।

भावार्थ-जिसके गले में माया का फन्दा पड़ा हुआ था उसे निताइचाँद ने राधादासी बना दिया, ऐसी महान करुणा की मैं बलिहारी जाता हूँ । इस स्वरूप जगाने वाले अवतार ने तो समस्त जड़ चेतन को प्रेम में मतवाला बना दिया है।

प्रभू निताइ प्राण गौर रसे तनु ढ़र ढ़र
महिमाय केवा पावे अन्त ।
भुवन पावन झुरये जड़जङ्गमे
हवे कि गोचर दृष्टि पथ ? ।। 67।।

भावार्थ-श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु एवं प्राणधन गौरसुन्दर का श्रीविग्रह प्रेम रसमय है और उससे प्रेम रस अनवरत झरता रहता है, उनकी महिमा का कौन पार पा सकता है ? उनके भुवन पावन गुणों द्वारा जड़ और चेतन द्रवित होकर झुर रहे हैं (सिसक सिसक कर रो रहे हैं) हाय क्या वे दोनों भैया कभी मेरे नेत्रों के सम्मुख पधार कर अपने दर्शनों द्वारा मेरे नयनों की प्यास बुझायेंगे ? (न जाने वह शुभ दिन कब आएगा जब मैं प्रेम बरसाने वाले दोनों भैया निताइ-गौराङ्ग का दर्शन कर के अपना जन्म सफल करूँगा।)

भुक्ति मुक्ति करि दान ना दिये जे गूढ़ प्रेम
रसमय किशोरी किशोर ।
हेन प्रेमागार द्वार खुले दिल निताइ आमार
घरे घरे प्रेमेर पाथार ।। 68।।

भावार्थ-रसमय युगलकिशोर भोग और मोक्ष का तो दान कर देते हैं, परन्तु अपना जो गूढ़ प्रेमधन है उसे प्रदान नहीं करते, उसी प्रेम भंडार के द्वार हमारे निताइ-गौराङ्ग ने सबके लिए खोल दिये (जिसकी जितनी इच्छा है लूटसकता है)- इस प्रकार घर-घर में प्रेम रस की बाढ़ आ गई । यद्यपि यह प्रेमधन श्रीवृषभानु किशोरी राधारानी की निजी सम्पत्ति है क्योंकि श्रीराधारानी प्रेम के उच्चतम स्वरूप महाभाव की घनीभूत विग्रह हैं परन्तु श्रीकृष्णावतार में इस प्रेम को श्रीकिशोरी जी ने भी ब्रज परिकरों तक ही

सीमित रखा। सर्व साधारण तो इससे अनभिज्ञ ही रहा। उसी गूढ़ प्रेमधन को निताइचाँद ने सर्वसाधारण, यहाँ तक कि पापी, अधम पतित जीवों को भी उन्मुक्त भाव से लुटा दिया।)

रसिक भजे रसधाम श्रीराधा राधा-रमण
भकत भजये भगवान ।
'शेखरेर' जीवन प्राण प्रभु नित्यानन्द राम
बाना जार पाषण्ड दलन ।। 69।।

भावार्थ-(इस पयार में निताइचाँद के प्रति इष्ट निष्ठा का परिचय दिया गया है) रसिक जन तो रसमय युगलकिशोर श्रीराधारमण का भजन करते हैं, भक्त लोग भगवान का भजन करते हैं परन्तु 'शेखर' के जीवन प्राण तो 'श्रीनित्यानन्द राम' प्रभु ही हैं जिनका बाना पाषण्ड दलन का है ।

मायार दासत्व करि बहु जन्म गेल चलि
ए जन्म जाउक निताइ नामे ।
निताई हउक धन प्राण रमुक हृदे अविराम
झुरि झुरि मरि निताइ गुणे।। 70।।

भावार्थ-मायाकी दासता करते हुए बहुत जन्म बीत गये यह जन्म तो 'निताइ' नाम का स्मरण, भजन व कीर्तन करते हुए व्यतीत हो । निताइचाँद ही हमारे प्राण धन हों एवं निरन्तर हमारे हृदय में रमण करते रहें हमारा हृदय उनकी नित्य विहार स्थली बन जायें तथा अन्त में निताइचाँद की गुणावली को स्मरण कर कर के हम झुर-झुर के मरें।

नाचे निताइ सुन्दर नाचे चूड़ा मनोहर
कर्णे नाचे मकर कुण्डल ।
नाचे रक्तनेत्रद्वय अखिल मर्म हरय
गले दोले वैजयन्ती माल ।। 71।।

भावार्थ-श्रीनिताइ सुन्दर सबके मन को चुराते हुए परम मनोहर नृत्य कर रहे हैं उनके सिर पर मनोहर चूड़ा, कानों में मकराकृति कुण्डल, गौर अनुराग से अरूण दोनों नयनारविन्द एवं गले में वैजयन्ती माला भी साथ-साथ नृत्य कर रही हैं(श्रीपाद का श्रृङ्गार सहित अङ्ग प्रत्यङ्ग नृत्य करते हुए अत्यन्त मनोहर प्रतीत हो रहा है।)

कटि ते किङ्गिणी बाजे माताय गोरा रसराजे
पाये बाजे नुपूर रसाल ।
नाचे निताइ नटराज गाये भकत समाज
बाजे मधुर खोल करताल ।। 72 ।।

भावार्थ-नटवर शिरोमणि निताइचाँद नाच रहे हैं एवं उनके भक्तगण मधुर खोल करताल बजाते हुए गान कर रहे हैं। नाचते हुए उनकी कटि में किंकिणी बज रही है एवं चरण कमलों में रसमय नूपुर बज रहे हैं जिनकी मधुर ध्वनि रसराज गौर सुन्दर को भी मोहित कर रही है।

सिंहेर गर्जने धाय प्रमत्त करीन्द्र प्राय
अङ्गछटाय जगत उजोर।
परिसर वक्षस्थल शिरे कुटिल कुन्तल
झीण कटि किवा मनोहर ।। 73।।

भावार्थ-(निताइचाँद के अपूर्व सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि) सिंह के समान गर्जते हुए, मतवाले हाथी की चाल से सारे संसार को अपनी अङ्गकान्ति द्वारा प्रकाशित करते हुए निताइ दयाल चले जा रहे हैं। उनका विशाल वक्ष-स्थल है, सिर पे घुँघराले बाल हैं तथा पतली कमर बरबस ही मन को हरण कर रही है।

दामिनी दर्पदमन रूप जिनि कोटि काम
उठे सौन्दर्य माधुर्य लहरी ।
नाना रत्न अलंकार प्रति अंगे चमत्कार
बले लय सर्व्व चित्त हरि ।। 74 ।।

भावार्थ-बिजली की चमक को फीकी कर देने वाला करोड़ों काम देवों के समान निताइचाँद का रूप है। उस रूप रस सागर में सौन्दर्य एवं माधुर्य की लहरें उच्छलित हो रही हैं। सभी अङ्गों में विभिन्न रत्नों के आभूषण सजे हुए हैं जिससे वे बलपूर्वक सबके चित्त को चुरा रहे हैं।

गौर कृपा मूर्ति धरे निताइ रूप विहरे
आचण्डाले धरि देय कोल।
गौरेर असाध्य काम समाधाने सुनिपुण
आज्ञा पालने परम चतुर।। 75।।

भावार्थ-गौरसुन्दर की कृपा के मूर्तिमान विग्रह हैं निताइचाँद। सो गौरकृपा ही निताइचाँद के रूप में मूर्तिमन्त होकर विहार कर रही है, वे चाण्डाल पर्यन्त सब जीवों को आलिंगन बद्ध कर रहे हैं (गले लगा रहे हैं) श्रीमन्महाप्रभु द्वारा दुष्कर कार्य को सम्पन्न करने में वे अत्यन्त निपुण हैं तथा उनकी आज्ञा पालन करने में परम चतुर हैं।

मुखे सुमधुर हासि उगारे सुधा राशि राशि
डुबाइल सकल संसार ।
पिये अमिया अखंड मातिल पाषंड भंड
जय जय ध्वनि अनिवार ।। 76 ।।

भावार्थ-परम सुन्दर निताइचाँद के मुख में अत्यन्त मधुर हँसी ढेरों अमृत बरसा रही है जिसमें सारा संसार डूबा जा रहा है। कभी भी समाप्त न होने वाली इस अमृत धारा को पान करके पाषण्डी व भण्ड (पतित, दुष्ट, नीच,कपटी) लोग आनन्द में मतवाले हो रहे हैं तथा चारों ओर

'जय हो निताइ' 'जय हो निताइ' की निरन्तर ध्वनि हो रही है (सब जीव प्राण भर कर जय जयकार कर रहे हैं।)

नित्यानन्द पारावारे डुबाओ मोरे बलात्कारे
हा हा गुरु करुणार सीमा ।
कुलाधिदेवा निताइ बलि गरव करि सदाइ फिरि
उड़ाइया विजयेर बाना ।। 77।।

भावार्थ–हे करुणा की अवधि स्वरूप गुरुदेव कृपा-पूर्वक (जबरदस्ती) मुझे नित्यानन्द रूपी समुद्र में डुबा दो और अपनी इस अहैतुकी कृपा के फलस्वरूप मैं गर्वपूर्वक कुल-देवता निताइचाँद की विजय पताका उड़ाता हुआ चारों दिशाओं में उनकी जय जयकार करता हुआ डोलूँगा । श्रीगुरुदेव, श्रीनित्यानन्द प्रभु के प्रकाश स्वरूप हैं बिना उनकी कृपा पाए इस प्रेम मार्ग में एक भी कदम बढ़ाना असम्भव है। अतएव श्रीगुरुदेव के श्री चरणकमलों का आश्रय लेकर अपने को सर्वथा अयोग्य मानते हुए, बिल्ली के बच्चे की तरह उन पर निर्भर रहना चाहिये तथा कातर भाव से उपरोक्त निवेदन करना चाहिये।

प्रभु राधारमण राम गौरांग रमु हृदि अविराम
हा हा निताइ पुराओ एइ आश।
गौर गणेर पदधूलि शिरे धरि हये बलि
पान करि प्रेमेर निर्य्यास ।। 78।।

भावार्थ–हा! हा! निताइ दयाल कृपा करके मेरी यही आशा पूर्ण करो कि श्रीयुत प्रभु राधारमण देव (मेरे परात्पर गुरुदेव) एवं श्रीयुत रामदास बाबा जी महाशय (मेरे परम गुरुदेव) निरन्तर मेरे हृदय में रमण करें। गौरसुन्दर के पार्षदों की चरण रज को मस्तक पर धारण करके बलवान होकर मैं प्रेम रस का सार पान करता रहूँ।

प्रभू नित्यानन्द गण केवल करुणा धाम
भुवन पावने दृढ़वत ।
निन्दुक पाषण्डी जत कृपाये हये समर्थ
दृष्टि मात्रे तारिले जगत।। 79।।

भावार्थ–श्रीनित्यानन्द प्रभु के परिकर केवल करुणा के भण्डार हैं तथा संसार को पवित्र करने का दृढ़व्रत उन्होंने धारण किया हुआ है। उनकी कृपा द्वारा निन्दुक एवं पाषण्डी लोग भी सामर्थ्यवान होकर दृष्टि मात्र से ही संसार का उद्धार कर देते हैं।

बाजे मधुर मृदङ्ग नाचे प्रभू नित्यानन्द
टलमल अनन्त ब्रह्माण्ड ।
गाय माधव वासुघोष नाचे गदाधर गौरीदास
अभिराम प्रेम प्रचंड ।। 80।।

भावार्थ–सुमधुर मृदंग बज रहा है, श्रीनित्यानन्द प्रभू नाच रहे हैं, उस नृत्य के द्वारा अनन्त ब्रह्माण्ड डगमगा रहे हैं। माधव घोष एवं वासुदेव घोष गान कर रहे हैं तथा गदाधरदास गौरीदास एवं अभिराम ठाकुर प्रचण्ड प्रेम में मग्न होकर नृत्य कर रहे हैं (ये सब प्रभुपाद निताइ दयाल के अन्तरंग पार्षद हैं जो कि उन्हीं के समान शक्तिशाली हैं।)

सदर्पे निताइ चले गौरहरि हरि बले
नेत्रे बहे शत शत धार ।
हेमदंड बाहुतुलि नाचे पहुँ फूलि फूलि
सुरधुनि तीर उजोर ।। 81 ।।

भावार्थ–गौरहरि हरि बोलते हुए गर्व सहित निताइचाँद चले जा रहे हैं, उनके नेत्रों से आँसुओं की सैकड़ों धाराएँ बह रही हैं, हेमदण्ड के समान भुजाओं को उठाकर प्रभुपाद निताइचाँद उद्दण्ड नृत्य कर रहे हैं तथा अपनी अंगकान्ति द्वारा सुरधुनि गंगाजी के किनारे उजाला कर रहे हैं ।

भाइ रे कानाइ बलि कभू काँदये फुकारि
कभू गौरेर धरये चरण ।
कभू दाड़ाये वामपाशे गौराङ्ग वल्लभावेशे
निताइ सर्व्व रसेर सदन ।। 82 ।।

भावार्थ-(बलरामजी के आवेश में) अरे कन्हैया भैया कहकर कभी फूट-फूट कर रोने लगते हैं कभी गौरसुन्दर के चरण पकड़ते हैं कभी गौराङ्ग वल्लभा के आवेश में गौरसुन्दर के वामाङ्ग में जाकर खड़े हो जाते हैं, इस प्रकार निताइचाँद सब रसों के आलय (भवन) स्वरूप हैं।

कलिदर्प विभञ्जन अखिल जन रञ्जन
दयामय जग हितकारी ।
ऐसेछे नदीयापुरे अनर्पित दानेर तरे
सबे हल प्रेम अधिकारी ।। 83।।

भावार्थ-श्रीनिताइचाँद कलियुग का घमण्ड चूर-चूर करने वाले, समस्त लोगों को आनन्द प्रदान करने वाले दयामय एवं संसार का भला करने वाले हैं। ये पूर्वकाल में कभी भी न दी गई वस्तु प्रेमधन का दान करने के लिए नदिया नगरी में पधारे हैं और इनके जाने के पश्चात् सब लोग प्रेम के अधिकारी बन गये हैं।

गोपीभाव गोपीप्रेम वेदादिर अगम्य
व्यास सनकादि जाते भ्रान्त ।
हेन प्रेम रसार्णवे पतित पाषंड डूबे
बलिहारी निताई महत्व ।। 84।।

भावार्थ-गोपीभाव एवं गोपीप्रेम वेदों के द्वारा भी अगम्य है (वेदों की भी वहाँ तक पहुँच नहीं है) व्यास एवं सनकादि जैसे महर्षिगण भी उस गोपीप्रेम में भ्रमित हो जाते हैं (इसका रहस्य ठीक तरह समझ नहीं पाते) ऐसे निगूढ़ प्रेमरस के समुद्र में पतित और पाषण्डी लोग भी डूब और तैरकर पार हो रहे हैं, ऐसे निताइचाँद के बड़प्पन की मैं बलिहारी जाता हूँ।

जार छाया स्पर्शे गंगास्नान से हल जगपावन
मातिया माताल त्रिभुवन ।
हेन कृपार उपमा नाई तार उपमा तार ठाँई
मूक हल वागदेवी वचन ।। 85।।

भावार्थ-जिसकी छाया के स्पर्श से गंगा स्नान करना होता था(निताइचाँद की कृपा से वे चाण्डाल भी) संसार को पवित्र करने वाले बन गये। इस प्रेम के मतवाले ने तीनों लोकों को ही मतवाला बना दिया है। इनकी कृपा की उपमा कहीं भी नहीं है, इसकी उपमा तो केवल इसी के पास है (इसकी महिमा गान करने में तो) साक्षात् सरस्वती देवी भी मूक हो गई है, उनके पास वो शब्द नहीं जो उनकी अपार महिमा का किञ्चित वर्णन कर सकें।

आनिया प्रेमेर वन्या अवनि करिल धन्या
डुबाइल भासाल जगत ।
दीन दुर्गत कांगाल लूटे प्रेम निरन्तर
नाचे गाये जेन मदमत्त ।। 86।।

भावार्थ-श्रीनिताइचाँद ने प्रेम की नदी को पृथ्वी पर लाकर इसे धन्य कर दिया और समस्त संसार इसमें डूब रहा है, तैर रहा है (आप्लावित हो रहा है) दीन, दुर्गति और कंगाल लोग प्रेम रस को निरन्तर लूट रहे हैं तथा मदिरा के मतवाले की तरह नाच व गा रहे हैं।

कोटि जन्म संकीर्तने कृष्ण ना करे प्रेमदाने
अपराध विचारे कृष्ण नाम ।
निताइ गौराङ्ग नाम अपराध विचार शून्य
प्रेम दाने परम प्रवीण ।। 87।।

भावार्थ-करोड़ों जन्मों तक कृष्ण नाम का संकीर्तन करने पर भी श्रीकृष्ण प्रेम प्रदान नहीं करते क्योंकि कृष्ण नाम में अपराधों का विचार है (प्रेम प्राप्ति के लिए अपराध शून्य होकर नाम करना परमावश्यक है) परन्तु श्रीनिताइ गौराङ्ग नाम में अपराधों का कोई विचार नहीं है, जिस किसी प्रकार से भी निताइ गौर नाम लेने से (अति शीघ्र) प्रेम धन की प्राप्ति होती है क्योंकि

यह नाम प्रेम प्रदान करने में अत्यन्त प्रवीण है। श्रीचैतन्य-चरितामृत में श्रीकृष्णदास कविराज महाशय ने कहा है कि-

निताइ गौराङ्ग नामे नाहि से सब विचार।
नाम लए प्रेम हय बहे अश्रुधार ।। 88।।

अतएव अभिमान का परित्याग करके दीनातिदीन भाव से परम करुण निताइ गौर के नाम का सङ्कीर्तन ही जीवोद्धार का परमश्रेष्ठ एवं सबसे सरल उपाय है।

अदृश्य अस्पृश्य बले जगत जारे ठेले फेले
प्रभू निताइ तारे बुके धरे ।
भय नाहि आमि आछि बले बयान भासे नयन जले
बिकाय प्राण गौर पद तले ।। 89।।

भावार्थ-संसार जिसे न देखने योग्य व अछूत समझकर ठुकरा देता है श्रीनित्यानन्द प्रभु उसे छाती से लगा लेते हैं और अश्रुपूरित मुखारविन्द द्वारा उसे आश्वासन देते हैं कि भैया मेरे होते हुए भला तुझे किस बात का डर है और इसे गौरसुन्दर के चरण कमलों में पूर्णरूपेण समर्पित कर देते हैं (बेच देते हैं।)

अन्ध मूक पंगु जड़ सबारे करिला पार
केंदे डाके दू बाहु तुलिया ।
के जावि भवेर पारे आय आय त्वरा करे
ऐसेछे मोर गौर विनोदिया ।। 90।।

भावार्थ-अन्धा, गूंगा, लूला एवं मूर्ख सब जीवों को निताइचाँद ने भवसागर से पार कर दिया। दोनों भुजा उठा कर निताइ दयाल रोते रोते पुकार रहे हैं कि भवसागर के पास जिसे भी जाना है, जल्दी करके आओ! आओ! मेरे विनोदी गौरहरि सबका उद्धार करने के लिए ही पृथ्वी पर पधारे हैं।

करिया मन विचार जे हय उचित कर
निताइ बिना नाहि नाहि गति ।
प्रति पदे अपराध ना जानि कत शत शत
ताहा हइते नाहिक निष्कृति ।। 91 ।।

भावार्थ- अरे मन तू सोच विचार कर जो ठीक लगे वही कर, पर यह अच्छी तरह से जान ले कि निताइचाँद के बिना तेरी गति नहीं है, नहीं है। कदम कदम पर न जाने कितने सैकड़ों सैकड़ों अपराध बनते रहते हैं और उनसे तेरा, बिना निताइचाँद की शरण लिए छुटकारा (निस्तार) सम्भव नहीं है।

महारत्न हाते पेये केन छाड़ चतुर हये
निताई पद सदा कर आश ।
माया मुग्ध कलिहत साधने मोरा असमर्थ
असाधने पूर्ण अभिलाष ।। 92 ।।

भावार्थ-हाथ में महारत्न को पाकर तू चतुर बनकर उसे क्यों छोड़ रहा है? अरे भैया! तू हमेशा निताइचाँद के चरणों की ही आशा कर क्योंकि हम लोग माया मुग्ध एवं कलिहत जीव हैं तथा साधन करने की भी हम में सामर्थ्य नहीं है। निताइ चरणों की शरण लेने से तेरी साधना बिना ही सब इच्छाएँ पूरी हो जाएँगी ।

गृहे महानिधि छेड़े के गिये अरण्ये फिरे
अहंकारे हइया विभोर ।
पाये पड़ि छाड़ भ्रम भज नित्यानन्द राम
यदि वाञ्छ युगल विहार।। 93 ।।

भावार्थ-अपने घर में विराजमान महान सम्पत्ति को छोड़कर तू जङ्गल में क्यों भटक रहा है? और अहङ्कार में सदा डूबा रहता है। भैया मैं तेरे पैर पड़ता हूँ तू भ्रम को छोड़कर श्रीनित्यानन्द राम का भजन कर, यदि तुझे युगल किशोर श्रीराधामाधव की दिव्य लीला के दर्शन एवं उसमें प्रवेश करने की कामना है, अर्थात् श्रीनिताइचाँद के भजन द्वारा तुझे युगल किशोर की प्राप्ति

अपने आप हो जाएगी, उसके लिए तुझे अलग से प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा ।

प्रभू निताइ प्रेम याचे मूक गाय पंगु नाचे
जय जय महिमा प्रचण्ड ।
देख रे कृपा अखण्ड भग्न कैल प्रभुर दण्ड
भासाये दिल करि तिन खण्ड ।। 94।।

भावार्थ- श्रीनित्यानन्द प्रभु प्रेम लुटा रहे हैं, गूंगा गा रहा है तथा पंगु नाच रहा है ऐसी प्रचण्ड महिमा की जय हो जय हो । अरे भाई उनकी अखंड कृपा तो देखो जो कि उन्होंने श्रीमन्महाप्रभु के दण्ड को तोड़ डाला और उसके तीन टुकड़े करके नदी में बहा दिया। (श्रीनिताइचाँद को दण्ड भङ्ग लीला में जीवों को दण्ड मुक्त करके उनके उद्धार की प्रेरणा निहित है।)

करे धृत लौहदण्ड गर्व करे खण्ड खण्ड
कलि राजे करि पदानत ।
पूर्व लीलाय हलधर कभू से भावे विभोर
सुदुर्बोध निताइ चरित ।। 95।।

भावार्थ-हाथ में लौहदण्ड धारण किये हुए (निताइचाँद) कलिराज को परास्त करके उसका अभिमान चूर-चूर कर रहे हैं। पूर्व-लीला (श्रीकृष्णावतार) के वे बलराम जी हैं अतएव वे कभी-कभी उसी (बलराम जी के) भाव में विभोर हो उठते हैं, इस प्रकार श्री निताईचाँद की लीलाएँ समझना अत्यन्त कठिन है (उनकी लीलाएँ बुद्धि का विषय नहीं हैं बल्कि श्रद्धा भक्ति पूर्वक उनका मनन चिन्तन ही श्रेयस्कर है।)

गौर अवतंस काने जिह्वा गौर नाम गाने
गौर बिना ना देखे नयने ।
गौराङ्ग सर्वस्व सार गौराङ्ग प्राण आधार
श्रीगौराङ्गे रमे अविरामे।। 96।।

भावार्थ-कानों में गौर नाम के कुण्डल धारण किये हुए हैं (अर्थात् कानों द्वारा गौरनाम का ही श्रवण करते हैं), जिह्वा द्वारा गौरनाम का ही गायन करते रहते हैं तथा गौर बिना नेत्रों द्वाराऔर कुछ भी नहीं देखते, इस प्रकार (श्रीनिताइ दयाल) श्रीगौराङ्गद्देव के सर्वस्व सार एवं प्राणों के आधार स्वरूप हैं तथा वे निरन्तर गौरसुन्दर में ही रमण करते रहते हैं।

निताइ अनन्त रूपे सेवे गोरा रस भूपे
भोज्य पेय वसन भूषण ।
पादुका छत्र चामर सखा सखी परिकर
पुष्प शय्या रत्न सिंहासन ।। 97 ।।

भावार्थ- सेवा विग्रह श्रीनिताइ दयाल अनन्त रूप धारण करके रसराज गौरसुन्दर की सेवा सम्पादन करते हैं जैसे खाने व पीने की वस्तुएँ, वस्त्र, आभूषण, पादुका, छत्र, चँवर सखा एवं सखियों का परिकर, फूलों की सेज तथा रत्न सिंहासनादि सब निताइचाँद के रूप हैं ।

इस पयार में श्रीपाद निताइचाँद को ही समस्त सेवा की सामग्री एवं सेवक रूप बताया गया है । पहले कहा जा चुका है कि गौरसुन्दर की विहार भूमि व विलास मन्दिर भी स्वयं निताइचाँद का ही स्वरूप है। इस प्रकार विभिन्न रूपों व लीलाओं द्वारा श्रीमन्महाप्रभु को सुख पहुँचाना ही हमारे निताइचाँद को अभीष्ट है। उनकी कृपा प्राप्त किये बिना गौर सुन्दर की सेवा प्राप्त करना असम्भव ही है। गुरुदेव के रूप में निताइचाँद ही जीव को गौरसुन्दर से मिलवाते हैं। अतएव ऐसे करुणा वारिधि श्रीगौराङ्ग सेवा विग्रह निताइचाँद के दासानुदासों का भाव देकर, सम्बन्ध स्थापित करने से ही गौर गोविन्द की नित्यलीला में प्रवेश व सेवाधिकार मिल सकता है।

नित्यानन्द परिकर परमाश्चर्य गुण-धर
दुइ लीलाये पूर्ण अधिकार ।
भावे भावे ब्रज लीला साक्षात् गौर सने खेला
विचित्राद्भुत महिमा भाण्डार।। 98।।

भावार्थ–श्रीनित्यानन्द प्रभु के परिकरगण अत्यन्त अद्‌भुत गुणों से सम्पन्न हैं उनका दोनों लीलाओं (नवद्वीप लीला एवं वृन्दावन लीला) में पूर्णअधिकार है, भाव देह द्वारा तो वे ब्रजलीला में सेवा परायण रहते हैं तथा साक्षात् रूप से वे श्रीमन्महाप्रभु के साथ खेलते हैं, इस प्रकार वे विचित्र एवं अद्‌भुत महिमा के भण्डार हैं।

निताइ कुञ्जकुटिरे रसराज गौराङ्ग खेले
विलास मन्दिर नित्यानन्द ।
विलासी गौर करि बुके सदा मग्न सेवा सुखे
कृष्ण चैतन्य गूढ़ रङ्ग।। 99 ।।

भावार्थ– (इस पयार में सेवा विग्रह निताइचाँद की अद्‌भुत सेवा का दिग्दर्शन कराया गया है। आलालनाथ नामक स्थान में जब श्रीमन्महाप्रभु ने दण्डवत प्रणाम किया तो निताइचाँद ने अपने प्राणवल्लभ को अपने शरीर द्वारा आच्छादन कर लिया जिससे वे सब प्रकार से सुरक्षित रहें। इसीलिये जो संन्यासी रूप श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु हैं, वे निताइ जड़ित गौर ही हैं।) निताइ रूपी कुञ्ज कुटीर में रसराज गौराङ्ग खेल रहे हैं श्री नित्यानन्द प्रभु–श्रीमन्महाप्रभु गौरसुन्दर के विलास मन्दिर हैं जो कि विलासी गौर को अपने हृदय में धारण करके सदा सेवा सुख में निमग्न रहते हैं–इस प्रकार श्रीकृष्णचैतन्य स्वरूप में उनकी अत्यन्त गूढ़ लीला प्रगट हो रही है (यह निताइ जड़ित गौर स्वरूप केवल श्रीराधारमण चरण देव बड़े–बाबाजी द्वारा ही प्रकाशित किया गया है क्योंकि यह तत्त्व अत्यन्त निगूढ़ है।)

हा हा नित्यानन्द राम मुखे बल अविराम
लोकापेक्षा दूरे परिहरि ।
नित्यानन्द भक्त संगे निताइ लीला प्रसंगे
मेते थाक दिवस शर्व्वरी ।। 100।।

भावार्थ-अरे भैया लोकापेक्षा-संसार की परवाह का दूर से ही परित्याग करके मुख से निरन्तर 'हा हा नित्यानन्द राम' बोलो। निताइचाँद के भक्तों के साथ निताइ-लीला प्रसङ्‌गों के श्रवण, कीर्तन एवं स्मरण करते हुए दिनरात मस्ती में डूबकर व्यतीत करो।

यदि काँदिवे निशिदिन तबे पावे राधाश्याम
साधनांगे हये सुन्निपुण ।
किन्तु जे मोदेर तरे, केंदे केंदे दिते फिरे
ना भज केन गौराङ्गचरण ।। 101 ।।

भावार्थ-यदि रात दिन विरह व्याकुल होकर तुम विलाप करोगे तभी समस्त साधनों के पालन में अत्यन्त चतुर होने पर ही तुम्हें राधारानी-श्यामसुन्दर की प्राप्ति होगी । किन्तु जो हमारे लिए प्रेमधन लुटाते हुए रोते-रोते घूमते फिरते हैं उन निताइ गौर दयाल के अरुण चरण कमलों का तुम भजन क्यों नहीं करते?

उन्नत उज्ज्वल प्रेम करिते सबे वितरण
ऐसेछे एबार प्रतिज्ञा करिया ।
हाय रे कपाल मन्द विषये हइनु अन्ध
ताँरे छाड़ि रहिनु भूलिया ।। 102 ।।

भावार्थ-करुणा सिन्धु निताइ दयाल इस बार प्रतिज्ञापूर्वक सब जीवों को उन्नत उज्ज्वल प्रेम रस बाँटने के लिये आए हैं फिर भी हाय हाय मेरे दुर्भाग्य के कारण मैं विषयों में अन्धा हो रहा हूँ और उन्हें छोड़कर विषयों में ही भूला हुआ हूँ।

अद्यापि नित्यानन्द राय श्रीगुरु रूपे विहरय
नाम प्रेमे माताय जगत ।
उथलिल प्रेम सिन्धु ना पाइया एक बिन्दु
कर्म दोषे रहिनु वञ्चित ।। 103 ।।

भावार्थ–आज भी श्रीनित्यानन्द प्रभु श्रीगुरुदेव के रूप में विहार करते हैं एवं नाम प्रेम में संसार को मतवाला बनाते हैं। प्रेमसिन्धु उच्छलित होने पर भी मुझे उसकी एक बूंद भी नहीं मिली हाय-हाय अपने कर्म दोष से मैं वञ्चित ही रहा।

हा हा प्रभु नित्यानन्द हा हा प्राण गौरचन्द्र
हा हा प्रभु प्रिय परिकर ।
ए दीन दुर्गत जने चाह हे कृपा नयने
उपस्थित आसि अन्तकाल ।। 104 ।।

भावार्थ–हा हा श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु, हा हा प्राण जीवन धन गौरसुन्दर, हा हा श्री नित्यानन्द प्रभु के प्यारे परिकर गण, इस दीन, दुर्गति (बुरी हालत वाले) जन को कृपा बरसाने वाले नेत्रों से देखिये (इस अधम जन पर कृपा दृष्टि कीजिए) मेरा अन्त समय निकट ही आन पहुँचा है (अब और विलम्ब न कीजिये क्योंकि न जाने कब शरीर का अन्त हो जाय।)

एक बार दिये देखा कर ए दुःखीरे रक्षा
निशिदिशि ज्वलितेछे हिया ।
जारा सुखेर सङ्गी छिल तारा सब छेड़े गेल
केन आछे एइ अभागिया ।105।।

भावार्थ-हे प्रभो! रात दिन मेरा हृदय तुम्हारे विरह में जल रहा है एक बार दर्शन देकर इस दुखी की रक्षा करो। जो भी मेरे सुख के साथी थे वो सब मेरा साथ छोड़ गए, फिर भी न जाने यह अभागा क्यों बचा हुआ है ।

ब्रह्मा शिव अनन्त जाहार ना पाय अन्त
अपार अगम्य जे महिमा।
दग्ध प्राण जुड़ावार तरे गाइनु किछु स्वल्पाक्षरे
धृष्टतार अवश्य दिवे क्षमा ।। 106 ।।

भावार्थ-ब्रह्माजी, शङ्करजी एवं शेषजी जिनका अन्त नहीं पा सकते और जिनकी महिमा अगम व अपार है अपने जलते हुए प्राण को शीतल करने के लिए मैंने उसे कुछ थोड़े ही शब्दों में गाया है । सब भक्तगण मेरी इस धृष्टताको अवश्य क्षमा करें।

गिरि गोवर्धन तटे जतिपुरा सन्निकटे
सुखमय कदम्ब कानने ।
महत पाद पद्म धूलि लेखाइल कृपा करि
प्रभु नित्यानन्द जन्म दिने ।। 107 ।।

भावार्थ-गिरिराज गोवर्धन की तलहटी में स्थित जतिपुरा के निकट एक सुखमय कदम्ब का वन है। प्रभु निताइचाँद के जन्म दिन के शुभ अवसर पर (माघी शुक्ला त्रयोदशी के दिन) महापुरुषों की चरण-धूलि ने ही कृपा करके यह (नित्यानन्द प्रभु की महिमा) मेरे द्वारा लिखवाई है ।

शचीसुत विश्वम्भर परि एइ रत्न हार
हये दीन शेखरे प्रसन्न ।
श्री गुरुदेवेर आनुगत्य दिये कर आत्मसात्
पाइ जेन निताइ चरण ।। 108 ।।

भावार्थ-हे शचीनन्दन विश्वम्भर महाप्रभो! आप इस निताइचाँद की गुणावली रूपी रत्नों द्वारा गूथे गए रत्न हार को पहन कर 'दीन शखेर' के ऊपर प्रसन्न हों तथा श्रीगुरुदेव के आनुगत्य में मुझे आत्मसात कर लें जिससे मैं निताइचाँद के चरणों की प्राप्ति कर सकूँ ।

'इति श्री श्री नित्यानन्द शतक सम्पूर्ण'

जय निताइ जय गौर

जय प्राण गौर गण! जय राधारमण राम!

जय श्री गुरुदेव शरण! शरण! शरण!

त्राहि! त्राहि! त्राहि!

!! जय निताइ !!

ब्रजविभूति श्रीश्यामदास विरचित

श्रीनिताईचाँद-चालीसा

श्रीगुरु-पदजल सुरसरी, करि तन-मन अभिषेक ।

श्रीनित्यानन्द पद-युगल वरणों यश कछु एक ।।

जय गुरु श्री गौराङ्ग निताई । वन्दौं चरण सरोज सुहाई ।। 1 ।।

जय संकर्षण जय बलरामा । जय नित्यानन्द जय सुखधामा ।। 2 ।।

जय पद्मावति नयनन तारे । द्विज श्री हाड़ाइ सुत प्यारे ।। 3 ।।

जयति जाह्नवा वसुधा नायक । प्रियतम प्राणपती सुखदायक ।। 4 ।।

वीरभद्र प्रभु जनक सुखारे । करुणावश सुवंश विस्तारे ।। 5 ।।

श्री संकर्षण त्रिभुवन भर्त्ता । उत्पति पालन परलय कर्त्ता ।। 6 ।।

कारण गर्भ पयोनिधि स्वामी । घट घट के प्रभु अन्तरयामी ।। 7 ।।

धरणीधर प्रभु शेष अनन्ता । श्रीगुरु, भक्ति, भक्त, भगवन्ता ।। 8 ।।

रोषरहित परमानन्द रूपा । सदा सत्वधर सत्य स्वरूपा ।। 9 ।।

अरुण तरुण तनु सुवरण आभा। गति गयन्द दृग जीवन लाभा ।। 10 ।।

नील वसन भूषित हलधारी । कुण्डल एक कान सुखकारी ।। 11 ।।

मुक्तामाल-जाल उर धारी । नूपुर भव-भञ्जन रवकारी ।। 12 ।।

कलि-पावन अवतार निताई । अद्‌भुत चरित भक्त मुनि गाई ।। 13 ।।

कृष्ण-भक्त यद्यपि बड़ भाई । कृष्ण-भक्ति मूरति बलराई ।। 14 ।।

कृष्णप्रेम प्रद कृष्णप्रेम धनि । संन्यासी अवधूत शिरोमनि ।। 15 ।।

छत्र वसन आसन धरि रूपा । निशदिन सेवत कृष्ण स्वरूपा ।। 16 ।।

उज्ज्वल प्रेम रसिक रसदाता । रसावेश रस रासि विधाता ।। 17 ।।

रसमय रसभुक् रस के धामा । रसिक-वन्द्य रसराज ललामा ।। 18 ।।

गौर सु-सेवक और सहाई । अग्रज गौर सखा सुखदाई ।। 19 ।।

नवद्वीप लीला विस्तारी । नीलाचल चल-अचल उद्धारी ।। 20 ।।

कृपासिन्धु पुनि कृपा अधीना । कृपापात्र कीन्हें खल दीना।। 21 ।।

हरीनाम लहैं भुजा उठाई । पुलक कम्प दृग अश्रु बहाई ।। 22 ।।

दीर्घ श्वास निश्वास हुंकारा । सात्विक भाव प्रकाश अपारा ।। 23 ।।

हरीनाम महिमा दरसाई । हरीनाम सुषमा सरसाई ।। 24 ।।

हरीनाम रस बस मतवारे । भ्रमत नयन निरवधि रतनारे ।। 25 ।।

हरीनाम जग भिक्षाकारी । हरीनाम मणि के भण्डारी ।। 26 ।।

हरदम हरि-हरि नाम उचारे । हरि हरि बोलत द्वारे-द्वारे।। 27 ।।

जगा मधा मद्यप अति भारे । गो ब्राह्मण हिंसक मतवारे ।। 28 ।।

सो प्रभु मस्तक किये प्रहारा । टप-टप बहे खून की धारा ।। 29 ।।

करुणा करि हरि नाम सुनाये । निज घातक निज गले लगाये ।। 30 ।।

अघ नाशे जग पावन कीने । सुर दुर्लभ प्रेमामृत दीने ।। 31 ।।

ऐसो कौन उदार जग माहीं । प्रेमदान दै श्वपचन काहीं ।। 32 ।।

कलियुग कलुषित जीव विचारे । गिन-गिन टेर-टेर सब तारे ।। 33 ।।

पतित बन्धु प्रभु पतित उद्धारी । पावन-पतित पाप संहारी ।। 34 ।।

विधि निषेध तुच्छहिं करि डारे । नाम प्रेम प्रीती विस्तारे ।। 35 ।।

प्रेम प्रदाता प्रेम भिखारी । प्रेम जीवन धन प्रेम प्रचारी ।। 36 ।।

प्रेमाधार प्रेम कल्पतरु । प्रेम विशारद पाप-ताप हरु ।। 37 ।।

नित्यानन्द नमामि नमामि । मो सम कौन अधम पथगामी ।। 38 ।।

पाहि पाहि प्रभु शरण तिहारी । प्रणतपाल प्रतिपल प्रणधारी ।। 39 ।।

'श्यामदास' महिमा नित गावै । प्रभु पद आस वास ब्रज पावै ।। 40 ।।

।। जय निताई गौर सीतानाथ ।।



श्री श्री विष्णुप्रिया गौराङ्ग सेवाश्रम

श्री लक्ष्मी नारायण दास

वनखण्डी महादेव, श्री राधाकुण्ड

मो. 9897457066, 78950228887

मुद्रक - कमला प्रिन्टिंग प्रेस
रेतिया बाजार, राया (मथुरा)
मो. 7983979842